प्रयास

सपनों को सच करने का....

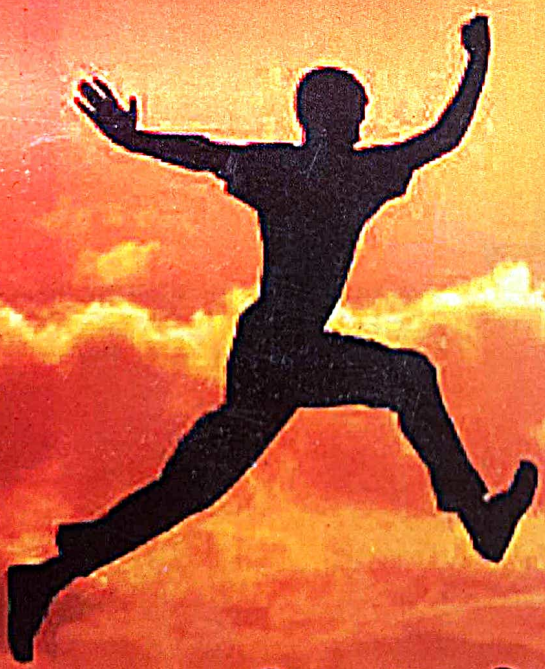

राजा भोज शासकीय महाविद्यालय कटंगी
जिला- बालाघाट (म.प्र.)

प्राचार्य कक्ष

लाईब्रेरी

कम्प्यूटर कक्ष

कार्यालय

राजा भोज शासकीय महाविद्यालय कटंगी

जि. बालाघाट (म.प्र.)

प्रयास पत्रिका

2018-19

षष्टम अंक

:: प्राचार्य एवं संरक्षक ::

प्रो. अनिल कुमार शेन्डे

:: सम्पादक मण्डल ::

डॉ. कुसुमलता उइके

श्रीमती शुभ्रा तिवारी

डॉ. निखत खान

श्रीमती निगहत अफशा खान

श्री कुलदीप देशमुख

श्री दीपेन्द्र हिरकने

डॉ. कस्तूर चन्द पारधी

अनुक्रमणिका

	पेज नं.	संकलनकर्ता/लेखक
संदेश	1–2	–
प्राचार्य की कलम से...	3	प्रो. अनिल कुमार शेण्डे
सम्पादकीय	4	डॉ. कुसुमलता उइके, श्रीमती शुभ्रा तिवारी
महाविद्यालय के गौरव	5	
जीवन का रहस्य	6	अनिता देशमुख
मेरी माँ प्यारी माँ	6	मयूरी लकेश ठाकरे
चाणक्य की भूमिका	7	रागिनी जैन
माँ	7	आरती सोनवाने
Apj Abdul Kalam	8	काजल सरोडे
सूचना के अधिकार	8	डॉ. निखत खान
बेटियाँ	9	शुभ्रा तिवारी
मैं कौन हूँ, मैं क्या हूँ	10	अक्षिता मेश्राम
शायरियाँ	10	नीतू राहंगडाले
फॉर्मुला सज्जन बनने का	11	
एक नजर इधर भी	11	
हमारी राष्ट्रभाषा : हिन्दी	12	निगहत अफशां खान
स्थिति को समझे बिना फैसले ना लें	13	अनामिका मिश्रा
राष्ट्रीय गीत	13	प्रतिभा भैरम
प्यारी माँ	13	दिक्षा राहंगडाले
नारी	14	कु. निशा राहंगडाले
मेरे पापा	14	आकाश विश्वकर्मा
स्वयं को ऐसा बनाओ	15	संगीता मात्रे
हम हमेशा दोस्त रहेंगे	15	आरती निषाद
How to be successful in life	16	ममता चौधरी
एक कदम स्वच्छता की ओर	16	सौरभ तहेकार
शिक्षा	16	योगेन्द्र गजभिये
हमें संसार सजाना है	17	लता पंचेश्वर
देश का मान	17	माया चौधरी
सीखना है तो यह सीखो	17	नेहा कुम्भलकर
आत्मविश्वास	18	फरीन खान
माँ की दुलारी	18	निकिता ठाकरे
माता – पिता	19	
पिता – पुत्र	19	राजूविश्वकर्मा
आज का समय	20	रोशनी कुम्भलकर
मंजिले	20	वर्षा अगासे
पिता	20	सीमा बिसेन
जीवन क्या है	21	मीनाक्षी चौधरी
मिट्टी का खिलौना मिट्टी में मिल जायेगा	21	रागिनी पटले
बाल विवाह पर विचार	22	संजना हरडे
कुछ स्थानों के भौगोलिक उपनाम	22	महिमा गौतम
Founders of Social Media	23	दुर्गेश्वरी पाटिल
भारत की प्रमुख झीलें	24	ज्योति राहंगडाले
मध्यप्रदेश का सामान्य ज्ञान	25	अश्विनी हनयत
वर्तमान में भारत के राज्यों के मुख्यमंत्री व राज्यपाल	26	अनिल कुमार मेश्राम

	पेज नं.	संकलनकर्ता/लेखक
केन्द्र शासित प्रदेश के उपराज्यपाल एक प्रशासक	27	अनिल कुमार मेश्राम
भारत में वर्तमान में कौन क्या है।	27	अनिल कुमार मेश्राम
स्वयं सहायता समूह और महिला सशक्तिकरण	28	
किताब	28	कु. सुनिता वाघाड़े
समय का मोल	29	कु. कृष्णा उइके
डॉ. भीमराव आम्बेडकर	30	
सुविचार	30	कु. विद्या चौरे
एक कन्या की पुकार	31	कु. अरुणा गेडाम
आशा का दीपक	31	प्रेमलता पटले
नारी की महानता	32	
शायरियाँ	32	कु. प्रियंका कुशराम
असफलता सफलता का आईना	33	रोशनी अगासे
खुद पर यकीन हो तो पहाड़ भी हिला सकते है।	33	रोशनी अगासे
फ्लॉप शो	33	रोशनी अगासे
सुविचार	34	रोशनी अगासे
सफलता है मंजिल अपनी	34	पूर्णिमा चौधरी
जल ही जीवन	35	कु. निकिता पटले
व्यक्तित्व	35	अजय कुमार भलावी
Woman	36	शालिनी मेश्राम
मजेदार चुटकुले	37–38	ज्योति पटले
दहेज का माँग	39	कु. वंदना भैरम
शायरीयाँ	40	कु. नीतू कटरे
शायरी	40	आयुषी मानकर
लड़की भी बन सकती है, उत्तराधिकारी	41	कु. शीतल पारधी
सत्य वचन	41	कु. मनीषा मर्सकोले
सुविचार	42	अरुचि बिसेन
निश्चित ही सफलता मिल जायेगी	42	हर्ष रायकर
सुविचार	43	ज्योति मेश्राम
सीख	43	संगीता परते
भारत की जयकार से	44	अंशुल विश्वकर्मा
जिंदगी	44	नफीसा खान
सफलता	44	आशीष ठाकुर
जिंदगी की सच्चाई	45	गुलनाज खान
फनी जोक्स	46	दीक्षा गौतम
सत्य वचन	47	सीमा नागेश्वर
चुटकुले	48	दिव्या टेम्भरे
सुविचार	49	दीक्षा वासनिक
अच्छे विचार	49	दीक्षा वासनिक
The Love Song of J.Alfred Prufrock	50	कु. स्वाति ब्रम्हे
मुझको तेरा सहारा सदा चाहिए	50	आरती गाडेकर
नारी सशक्तिकरण	51	आरती मासुरकर
छात्र जीवन के लिए सुविचार	52	विशाल पटले
माता–पिता को भूलना नहीं	52	कु. लीना मेश्राम
English a Vernacular	53	शुभ्रा तिवारी
स्त्रियों के लिये बना दहेज अभिशाप	53	याशमी वट्टी
युवा उत्सव 2019	54	
राजाभोज शासकीय महाविद्यालय से सत्र 2018–19 में संभाग एवं राज्य स्तर पर प्रतिनिधित्व करने वाले छात्र–छात्राओं की सूची	55	
पूर्व छात्र सम्मेलन	56	
मतदाता जागरुकता (प्रतिवेदन)	56	
रेड रिबन (प्रतिवेदन)	57	
रसायन शास्त्र (प्रतिवेदन)	57	
वनस्पति शास्त्र विभाग (प्रतिवेदन)	58	
महाविद्यालय परिवार	59–60	

टामलाल सहारे
विधायक
विधानसभा क्षेत्र–कटंगी क्र.– 113
जिला – बालाघाट
(म.प्र.)

निवास – नवेगांव
पो. तुमसर (छोटा)
तह. तिरोड़ी (कटंगी)
जिला– बालाघाट (म.प्र.)
मो: 8435663238, 9407098349

शुभकामना संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि राजा भोज शासकीय महाविद्यालय कटंगी में महाविद्यालयीन पत्रिका "प्रयास" के षष्ट्म अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालयीन पत्रिकायें छात्रों में छुपे साहित्यिक कौशल को व्यक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह उनमें चिंतन, लेखन को विकसित करने हेतु एक उत्तम प्रयास है।

महाविद्यालयीन परिवार एवं समस्त छात्र/छात्राओं को इसके प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई।

टामलाल सहारे
विधायक कटंगी
जिला – बालाघाट (म.प्र.)

फोन: (07632) 240150 / 240250 (का.)
240660 (नि.)
240250 (फै.)
E-mail: dmbalaghat@mp.nic.in
Website: www.balaghat.nic.in

कार्यालय कलेक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट, बालाघाट, मध्यप्रदेश

शुभकामना संदेश

प्रसन्नता का विषय है, कि राजा भोज शासकीय महाविद्यालय कटंगी, जिला - बालाघाट द्वारा महाविद्यालयीन पत्रिका "प्रयास" के 6 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

पत्रिकायें निःसंदेह विद्यार्थियों में साहित्यिक, नैसर्गिक एवं बौध्दिक विकास में सहायक होती है। साथ ही महाविद्यालय को अपनी वार्षिक गतिविधियों को प्रस्तुत करने का अवसर भी प्रदान करती है।

मैं महाविद्यालयीन पत्रिका "प्रयास" के 6 वें अंक के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

(दीपक आर्य)
कलेक्टर, बालाघाट

शुभकामना संदेश

प्राचार्य की कलम से...

अत्यन्त हर्ष कि बात है, कि प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी महाविद्यालय द्वारा प्रयास पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। छात्र / छात्राओं की रचनात्मक प्रतिभा को प्रदर्शित करने और उसे निखार लाने का सबसे प्रभावशाली माध्यम है, महाविद्यालय की प्रयास पत्रिका यूं तो छात्र / छात्राओं में रचनात्मक प्रतिभा बहुत अधिक होती है परन्तु आवश्यकता इस बात की है कि उन्हें उचित मार्गदर्शन मिल जाये तो छात्र / छात्राओं का रचनात्मक विकास होगा और वे बड़ी असानी से अपनी मंजिल की ओर बढ़ते चले जायेंगे। छात्र / छात्राओं को अपनी मौलिक अभिव्यक्ति के लिए पूरी स्वतंत्रता होनी चाहिए तभी वे अपनी मन की बात लिखना सीख सकेंगे। छात्रों की रचना अपरिपक्व रहती है परन्तु यही अपरिपक्वता उनकी मौलिकता का परिचायक है। प्रयास पत्रिका की यही अपनी विशेषता है, कि इसमें छात्रों को मौलिक रचनाएँ प्रकाशित करवाने का अवसर मिलता है।

छात्र / छात्राओं का प्रयास पत्रिका के इस अंक के प्रकाशन में उन सभी छात्रों, प्राध्यापकों, शिक्षकों, अतिथि विद्वानों महाविद्यालय प्रबंधन समिति, उच्चशिक्षा विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों को जिन्होंने पत्रिका के लिए अपनी रचनाएँ एवं चित्र प्रकाशनार्थ दिये। उन सभी के प्रति विनम्र आभार व्यक्त करता हूँ।

प्रो. अनिल कुमार शेन्डे
प्रभारी प्राचार्य
शासकीय कला महाविद्यालय
कटंगी, बालाघाट

संपादकीय

अभिव्यक्ति मनुष्य की सबसे बड़ी खासियत है, जो उसे बाकी प्राणियों से अलग करती है। शब्दों को माध्यम बनाकर भावनाओं को अभिव्यक्त करना एक कला है। महाविद्यालयीन पत्रिकाएँ इस कला को विकसित करने का एक उचित प्रयास है। आज के प्रौद्योगिक एवं संचार के युग में इंटरनेट, सोशल मीडिया के माध्यम से व्यक्ति अपनी भावनाओं को आसानी से जाहिर कर सकता है। लेकिन यह देखा जा रहा है, कि हम लिखने की कला भूलते जा रहें है। जो आगामी पीढ़ी के लिये एक अभिशाप साबित हो सकता है। लेखन न केवल अभिव्यक्ति का माध्यम है अपितु सांस्कृतिक धरोहर को सहेजने का भी तरीका है। महाविद्यालयीन पत्रिकाएँ जहाँ एक तरफ महाविद्यालय की उत्कृष्टता एवं नवीन प्रयासों की जानकारी उपलब्ध कराती है। वहीं लेखन को भी एक रूची के तौर पर विकसित करते हैं। हम जो बोलकर नहीं बता पाते उन्हीं भावनाओं को लेखन के द्वारा आसानी से व्यक्त कर सकते है। यह पत्रिका छात्रों तथा शिक्षकों के भीतर छुपे लेखन कौशल को उजागर करने के साथ-साथ ज्ञान तथा जानकारियों के आदान-प्रदान का भी श्रेष्ठ माध्यम है।

पत्रिका में प्रकाशित लेखों, शुभ संदेशों, प्रतिवेदनों तथा प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से मुद्रण हेतु सहयोग के लिये आप सभी के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते है।

डॉ. कुसुमलता उइके
संपादक

श्रीमती शुभा तिवारी
सह - संपादक

महाविद्यालय के गौरव

संभाग स्तरीय खो-खो प्रतियोगिता में महाविद्यालय का प्रतिनिधित्व करने वाली छात्रायें...

निशा कोवाचे
वी.एस.सी. (प्रथम सेमेस्टर)

दुर्गा मेश्राम
वी.एस.सी. (द्वितीय वर्ष)

संगीता परते
एम.एस.सी. (प्रथम सेमेस्टर)

दीक्षा राहंगडाले
बी.ए. (प्रथम सेमेस्टर)

(पेन्टिंग)

जीवन का रहस्य

1) बिना पुण्य किये पुण्य का फल सबको चाहिये, पाप करके भी पाप का किसी को नहीं चाहिये।
2) इस तरह न खाओ की मर्ज हो जाये। इस तरह न बोले कि क्लेष हो जाये, इस तरह न चलो कि देर हो जाये।
3) इस तरह न कमाओ कि पाप हो जाये, इस तरह खर्च न करो कि कर्ज हो जाये।
4) कभी किसी अच्छे इंसान से गलती हो जाये तो भी सहन कर लो, क्योंकि मोती अगर कचरे में भी गिर जाये तो भी कीमती रहता है।
5) गुस्सा अकेला आता है मगर हमेशा सारी अच्छाई ले जाता है। सब्र भी अकेला आता है, मगर हमेशा खुशियां दे जाता है।
6) एक छोटी सी चीटी आपके पैर को काट सकती है, मगर आप उसके पैर को नहीं कांट सकते। इसलिये जीवन में किसी को छोटा न समझें क्योंकि जो वो कर सकता है शायद आप न कर पायें।
7) यदि कोई व्यक्ति आपसे जलता है, तो ये उसकी बुरी आदत नहीं है, बल्कि आपकी काबिलियत है जो उसे ये काम करने पर मजबूर करती है।
8) समाज में बदलाव क्यों नहीं आता, क्योंकि गरीब में हिम्मत नहीं, मध्यम में फुरसत नहीं, अमीर को जरूरत नहीं।
9) जो लोग आपसे जलते हैं उन लोगों से नफरत कभी मत करना क्योंकि यही वो लोग है, जो समझते हैं कि आप उनसे बेहतर है।

अनिता देशमुख
समाजशास्त्र विभाग अतिथि विद्वान

माँ तो अनमोल है,
माँ का न कोई मोल है।
माँ के बिना सारा जहान सूना है,
माँ के बिना अधूरा मन का कोना है।
माँ तो दिये की तरह होती है।
जो स्वयं जलती है और बच्चों को रोशनी देती है।
माँ तो दया का संसार होती है।
वे किस्मत वाले होते है। जिनकी माँ होती हे।
माँ रोते हुए को हँसाती है।
भूखों को भोजन कराती है।
माँ रातों में लोरियां गाती है।
वह स्वयं जागकर हमें सुलाती है।
माँ तो करूणा की मूरत है।
हम सब माँ की सूरत है।

मयूरी लकेश ठाकरे
बी.ए. द्वितीय वर्ष

चाणक्य की भूमिका

जन्म	–	अनुमानतः ईसापूर्व 375 पाटलिपुत्र
मृत्यु	–	अनुमानतः ईसापूर्व 283 पाटलिपुत्र
आवास	–	पाटलिपुत्र
शिक्षा प्राप्त	–	तक्षशिला
व्यवसाय	–	चन्द्रगुप्त मौर्य के महामंत्री (विष्णुपुराण)

भागवत आदि पुराणों तथा कथा सरित्सागर आदि संस्कृत ग्रंथों में तो चाणक्य का नाम आया ही है, बौध्द ग्रंथों में भी इसकी कथा बराबर मिलती है। बुध्दघोष की बनाई हुई विनयपिटक की टीका तथा महानाम स्थविर रचित महावंश की टीका में चाणक्य का वृतांत दिया हुआ है। चाणक्य तक्षशिला के निवासी थे। इनके जीवन की घटनाओं का विशेष संबंध मौर्य चंद्रगुप्त की राज्य प्राप्ति से है। ये उस समय के एक प्रसिध्द विद्वान थे, इसमें कोई संदेह नहीं। कहते हैं कि चाणक्य राजसी ठाठ-बाठ से दूर एक छोटी सी कुटिया में रहते थे।

वे चन्द्रगुप्त मौर्य के महामंत्री थे। वे "कौटिल्य" नाम से भी विख्यात है। वे तक्षशिला विश्वविद्यालय के आचार्य थे। उन्होंने नंदवश का नाश करके चंद्रगुप्त मौर्य को राजा बनाया। उनके द्वारा रचित अर्थशास्त्र राजनीति, अर्थनीति, कृषि, समाजनीति आदि का महान ग्रंथ है अर्थशास्त्र मौर्यकालीन भारतीय समाज का दर्पण माना जाता है।

चाणक्य सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य (321-297) के महामंत्री थे। उन्होंने चंद्रगुप्त के प्रशासकीय उपयोग के लिए इस ग्रंथ की रचना की थी। यह मुख्यतः सुत्रशैली में लिखा हुआ है। और संस्कृत के सुत्रसाहित्य के काल और परंपरा में रखा जा सकता है। यह शास्त्र अनावश्यक विस्तार से रहित, समझने और ग्रहण करने में सरल एवं कौटिल्य द्वारा उन शब्दों में रचा गया है। जिनका अर्थ सुनिश्रित हो चुका है।

अर्थशास्त्र में समसामयिक राजनीति अर्थनीति, विधि, समाजनीति तथा धर्माद पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। इस विषय के जितने ग्रंथ अभी तक उपलब्ध है। उनमें से वास्तविक जीवन का चित्रण करने के कारण यह सबसे अधिक मूल्यवान है। इस शास्त्र के प्रकाश में न केवल धर्म अर्थ और काम का प्रणयन और पालन होता है। अपितु अधर्म, अनर्थ तथा अवांछनीय का शासन भी होता है।

रागिनी जैन
(जे.बी.एस.) इकॉनॉमिक्स

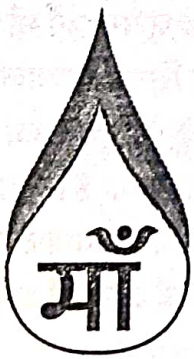

माँ ममता की छाया में
सुकून सा नजारा है
आँखों में वो प्यारापन
रस अमृत सा पावन मन

माँ जब मुस्कुराये तो
धरती अम्बर छा जाये
महती वादियों में माँ की
ममता ही ममता नजर आये

माँ का ओ भोलापन
आँखों में कोमलता लाये
माँ के आँचल के बिना
सारा संसार मुरझाये

सृष्टि का यह चक्र अनमोल
माँ के लिए कुर्बान रहे
माँ के महत्व को जान पाये
वो दुनिया को पहचान जाये।

आरती सोनवाने
बी.एस.सी. 2 वर्ष

Biography

APJ ABDUL KALAM'S

Life and Work

Avul Pakir Jainulathdeen Abdul Kalam usually known Dr. A.P.J. Abdul Kalam was born on 15th October 1931 at Rameshwaram in Tamil Nadu his father an ordinary boat owner Jainulabbdeen was a devoted Muslim he was a close friend of the Rameshwaram temple priest kalam was brought up in a multi religious tolerant society having progressive outlook. His father often gave examples from quran to make the young kalam live in the world without fear. He had seven siblings and a loving mother who - at times made chappatis for kalm. While rice for others as kalam's day would Start at four in the morning and end at eleven at night. kalam's father was uneducated but still he wanted kalam to study as kalam was bright student so he always had the support of his teachers. Kalam held Various positions in the Indian space research rganisation (ISRO) and Defence research and Development Organisation (DRDO) and become principal Scientific advisor to the Government of India. holding the rank of a cabinet minister.

Dr. Kalam became the 11th president of India and served from 2002 to 2007. He is one the few presidents who have touched the hearts of all and he was called as the people's president. In India he is highly popular as space scientist and engineer. He is popularly known as Missile man of India.

Kajal Sarode
B.A. 5 sem.
English Literature

सूचना के अधिकार

सूचना के अधिकार ने हाल के वर्षों में भारतीय व्यवस्था में अपनी अलग पहचान बनाया है। वास्तव में शासन प्रक्रिया को सुदृढ़ और पारदर्शी बनाने के लिए नागरिकों को शासन और प्रशासन की जानकारी होना अत्यंत आवश्यक है। सूचना का अधिकार सुशासन की मौलिक आवश्यकता है। स्वीडन पहला देश था जिसने सर्वप्रथम 1766 में अपने नागरिकों को यह अधिकार प्रदान किया। फिनलैण्ड ने सन् 1951 में सूचना के अधिकार को कानूनी अधिकार के रूप में मान्यत दी। अमेरिका में 1966, डेनमार्क एवं नार्वे में 1970, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा और न्यूजीलैण्ड ने 1980, ब्रिटेन में 2000 में सूचना का अधिकार प्रदान किया गया। 13 अक्टूबर 2005 को यह "सूचना का अधिकार 2005" के रूप में जम्मू कश्मीर को छोड़कर पूरे भारत में लागू हो गया।

इस कानून के तहत कोई भी भारतीय नागरिक किसी भी लोक प्राधिकारी से आवश्यक सूचना की मांग कर सकता है। उस प्राधिकारी के लिए आवश्यक सूचना की मांग कर सकता है। उस प्राधिकारी के लिए आवश्यक होंगा कि वह मांगकर्ता को 30 दिन के भीतर वांछित सूचना उपलब्ध कराए। इसके अतिरिक्त यदि किसी सूचना का संबंध किसी व्यक्ति के जीवन एवं स्वतंत्रता से है तो वांछित सूचना 24 घंटे के भीतर दिया जाना आवश्यक है। सूचना के अधिकार के अस्तित्व में आने से प्रशासन में आम आदमी की भागीदारी बढ़ी है। सरकार के सभी क्रियाकलाप अब लोगों की नजरों में है। इसमें अभिलेख, दस्तावेज, ज्ञापन, ई-मेल, प्रेस विज्ञप्ति, आदेश, रिपोर्ट आंकड़ों आदि को सम्मिलित किया गया है।

डॉ. निखत खान
अतिथि विद्वान (राजनीति विज्ञान)

बेटियाँ

छोड़कर पुराना घरौंदा नया घोंसला बनाती है।
सजाती है, संवारती है, उसी शिद्दत से उस नये आशियाने को
जिम्मेदारियाँ सम्हालते हुए भी चहकती रहती है।
चिड़ियों जैसी होती हैं बेटियाँ।

पनपता कहाँ है फिर से जड़ से उखड़ा हुआ पौधा
नयी जमीन में फिर से लहलहाती है वो
पीहर को दिल में बसाये सम्हालती है ससुराल को जतन से
माँ बाबुल की याद संजोये सास-ससुर की सेवा में लगी रहती हैं बेटियाँ।

ससुराल होता, मायका भी होता है
लेकिन खुद का घर कहीं नहीं
एक बागवान सी देखभाल कर भर देती है बगिया को बहारों से
फिर भी एक नीड़ की तलाश में भटकती हुई
अपनी ही पहचान को तरसती है बेटियाँ।

बेटे से ज्यादा ध्यान रखती है दुलार लुटाती है,
फिर भी जाने क्यों इस जहान में आने से पहले ही मार दिया जात है उन्हें
जन्म हो भी तो समाज कहाँ सुकून से रहने देता है।
कभी दहेज के, तो कभी इज्जत के नाम पर जलती है रोज ही
अब तो संसार में जन्म लेने से भी डरती हैं बेटियाँ

शुभा तिवारी
(अंग्रेजी विभाग)

"Poetry on Woman"
मैं कौन हूँ, मैं क्या हूँ

मेरी हिम्मत, मेरा हौसला,
मेरी उड़ान देखकर पूछते है लोग अक्सर
मैं कौन हूं, मैं क्या हूं

जो बिता इतने साल उस सबको एक गठरी
में बांधकर कंधे पर डालकर चलती हूं
मत पूछना ये गठरी कितनी भारी है।
क्योंकि मेरी लड़ाई आज भी जारी है।

आज मैं उन सबको एक जवाब देना चाहती हूं
शायद उन जख्मों के कुछ हिसाब लेना चाहती हूं।
जो किया सुना और देखा उतना ही बताती हूं।
आपके सामने औरत की एक तस्वीर नयी सी बनाती हूं।
मैं कौन हूं मैं क्या हूं बस यही बताने आयी हूं।

मैं वो हूं जो युगों युगों तक कुचली गई
युगों युगों तक रौंदी गई
आग की शरम बताकर चूल्हे में औंधी गई।

मैं कौन हूं, मैं क्या हूं
मैं देश का अभिमान हूं मैं कल्पना की उड़ान हूं।
मैं कश्मीर की सुन्दर वादी ही नहीं मैं
देश का रेगिस्तान हूं।

मैं नहीं राम की सीता, मैं वो दुख जो उस पर बिता।

मैं कौन हूं, मैं क्या हूं
मैं सारे जायज इरादों की एक नाजायज आवाज हूं।
बरसों से देखा गया एक प्यारा सा ख्वाब हूं।
बीते काले कल का एक सुन्दर सा आज हूं।
चहकती चिड़ियों में शायद इकलौता बाज हूं।
पर मुझे महसूस करके देखो मैं सिर्फ एक जज़्बात हूं।
मैं कौन हूं, मैं क्या हूं।

अक्षिता मेश्राम
बी.एस.सी.
तृतीय वर्ष (विज्ञान संकाय)

शायरीयाँ

1. प्यार उससे करो जो तुमसे प्यार करें
खुद से भी ज्यादा तुम पर ऐतबार करे
तुम बस एक बार कहो की रूका दो पल
और वो उन दो पलों के लिए
पूरी जिंदगी इंतजार करें।

2. दिन बीत जाते है, सुहानी यादें बनकर
बातें रह जाती है कहानी बनकर
पर दोस्त तो हमेशा दिल के करीब रहते हैं
कभी मुस्कान तो कभी आंखों का पानी बनकर।

3. हम तो तेरे दिल की महफिल सजाने आये थे।
तेरी कसम तुझे अपना बनाने आये थे।
किस बात की सजा दी तूने हमको बेवफा
हम तो तेरे दर्द को अपना बनाने आये थे।

4. एक प्यारा सा दिल जो कभी नफरत नहीं करता
एक प्यारी सी मुस्कान, जो कभी फीकी नहीं पड़ती
एक एहसास जो कभी दुख नहीं देता
और एक रिश्ता जो कभी खत्म नहीं होता वह है दोस्त।

5. उम्मीदों को तू न तोड़ना न हौसले अब तू तोड़ना
जब हो राह कठिन और रात घनी चाहे जो
हो तो न रूकना मंजिल से तुम मुंह न मोड़ना।

6. Life is better with friend.
सपना हमारा कुछ ऐसा हो
ख्वाब हमारा कुछ ऐसा हो
जिंदगी में प्यार मिले न मिले
दोस्त मिले तो सिर्फ तुम्हारे जैसा हो।

नीतू राहंगडाले
बी.एस.सी. 6 सेम.

फॉर्मुला सज्जन बनने का

1. उद्देश्य :- जिन्दगी में सज्जन वनना।
2. आवश्यक सामग्री :- सज्जन व्यक्ति वनने के लिये निम्न चीजों को एकत्र करें।

1. सत्य के पत्ते	2. ईमानदारी जड़
3. मिलाप के आंवले	4. संगठन की छाल
5. उदारता का रस	6. वाणी का गुण
7. परोपकार के बीज	8. सत्यसंग का रस
9. दया के फूल	10. राष्ट्रप्रेम का शहद

विधिः- इन सभी सामग्री को अच्छी तरह पीसकर आत्मा रूपी कोनिकल प्लास्क में शक्ति रूपी घी डालकर प्रेमरूपी बर्नर पर रखकर ध्यान की आग में पका लें। फिर नीचे उतारकर तथा ठंडा कर दिमाग की शीशी में भर लें तथा प्रतिदिन सुबह शाम संतोष गुलकंद के साथ एक-एक चम्मच लें।

4. सेवन विधि :- दवा लेने से पूर्व दोनों समय राष्ट्र प्रेम खिचड़ी में नैतिकता का घी डालकर भर पेट खायें।
5. सावधानियाँ :- इस दवा का सेवन यदि आप कर रहें हैं तो निम्न चीजों का परहेज करें।

1. क्रोध की मिर्च	2. अहंकार का तेल
3. लोभ की शक्कर	4. धोखे का पापड़ और दुराचार की खटाई से बचें।

लाभ :- इस दवा का सेवन करने पर व्यक्ति एक महीने के अंदर सज्जर पुरूष बन सकता है। यदि आप इसको खरीदना चाहते हैं तो आज ही बुकिंग कराये। "अंतर आत्मा मेडिकल स्टोर्स"

"कविता, कहानी, ईमानदारी और सच्चाई से हमारा नाता है।
दीवारों पर लिखते हैं और चुनावों में पुत जाता है।

खेमराज कनौजिया

☞ एक नजर इधर भी

1.	एक	-	ईश्वर, सूर्य, चंद्र, पृथ्वी, गणेश का दाँत, शुक्राचार्य की आँख।
2.	दो विद्या	-	परा, अपरा।
3.	तीन गुण	-	सतोगुण, तपोगुण, रजोगुण।
4.	चार शत्रु	-	काम, क्रोध, मोह, लोभ
5.	पाँच विद्यार्थी लक्षण	-	वक्रध्यान, वाकचेण्य, खान निद्रा, अल्पहार, ग्रहत्याग
6.	छः जीव के गुण	-	सुख, दुख, ज्ञान, प्रयत्न, इच्छा, द्वेष।
7.	सात दोष	-	आलस्य, निद्रा, स्वाद, मंदबुध्दि, महाचिता, दृढ़, काम, क्रीड़ा।
8.	नवधा भक्ति	-	श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद सेवन, अर्चन, वंदन, सरक, दाज, आत्मनिवेदन।
9.	दसधर्म लक्षण	-	क्षमा, अस्तेय, शौच, घृति, क्षमा, इन्द्रियनिग्रह, घी, विधा, सत्य, क्रोध त्याग।
10.	बारह भूषण	-	हार, नथ, चूडी, अंगूठी, शीशफूल, वेदा, कंगन, कंठथी, बाजूबंध, टीका, नुपूर किकणी।
11.	चौदह विधा	-	ब्रहम ज्ञान, व्याकरण, ज्योतिष, वैदिक, श्रुति, रसायन, जलतरंग, संगीत, नाटक, धनविधा, घुड़सवारी, कोकशास्त्र, चोरी, चातुर्य।
12.	सोलह संस्कार	-	गर्भाधान, पुँसवान, श्रीमान्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निस्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकर्म, कर्णवेध, उपनयन, वेदारंभ, विवाह, समायर्क्तन, वनप्रस्थ, सन्यास, अन्तयेष्टि।
13.	चौबीस अवतार	-	सन्त्कुमार, वाराह, नारद, नर-नारायण, कपिल, दतात्रेय, यज्ञ पुरूष, ऋषभ, पृथु, मत्स्य, कर्म, धनवन्तरि, मोहनी, नृसिंह, वावन, परशुराम, व्यास हंस, राम, कृष्ण हथग्रीव, हरिबुध्दि, कार्तिक।

खेमराज कनौजिया
अतिथि विद्वान (रसायन शास्त्र)

हमारी राष्ट्रभाषा : हिन्दी

भाषा के द्वारा मनुष्य अपने विचारों को आदान - प्रदान करता है। अपनी बात को कहने के लिए और दूसरे की बात को समझने के लिए भाषा एक सशक्त साधन है।

प्रत्येक राष्ट्र की अपनी अलग-अलग भाषाएं होती है। लेकिन उनका राज-कार्य जिस भाषा में होता है और जो जन संपर्क की भाषा होती है, उसे ही राष्ट्र भाषा का दर्जा प्राप्त होता है।

भारत में भी अनेक राज्य है। उन राज्यों की अपनी अलग-अलग भाषाएं है। इस प्रकार भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है। लेकिन उसकी अपनी अपनी एक राष्ट्र भाषा है - हिन्दी। 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को यह गौरव प्राप्त हुआ। 26 जनवरी 1950 को भारत का अपना संविधान बना। हिन्दी का राजभाषा का दर्जा दिया गया। यह माना कि धीरे-धीरे हिन्दी अंग्रेजी का स्थान ले लेगी और अंग्रेजी पर हिन्दी का प्रभुत्व होगा।

आजादी के इतने वर्षों बाद भी हिन्दी को जो गौरव पूर्ण स्थान प्राप्त होना चाहिए था वह उसे नहीं मिला। अब यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि हिन्दी को उस का यह पद कैसे दिलाया जाए? कौन से ऐसे उपाय किये जाएं जिससे हम अपने लक्ष्य तक पहुंच सकें।

यद्यपि हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी है, परंतु हमारा चिंतन आज भी विदेशी है। हमें वार्तालाप करते समय अंग्रेजी का प्रयोग करने में गौरव समझते हैं, भले ही अशुध्द अंग्रेजी हो। हमें इस मानसिकता का परित्याग करना चाहिए और हिन्दी का प्रयोग करने में गर्व अनुभव करना चाहिए। हम सरकारी कार्यालय बैंक अथवा जहां भी कार्य करते हैं, हमें हिन्दी में ही कार्य करना चाहिए। निमंत्रण पत्र, नामपट्टी हिन्दी में होनी चाहिए। अदालतों का कार्य हिन्दी में होना चाहिए। बिजली, पानी, गृहकर आदि के बिल जनता को हिन्दी में दिये जाने चाहिए। इससे हिन्दी का प्रचार और प्रसार होगा।

प्राथमिक स्तर से स्नातक तक हिन्दी अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाई जानी चाहिए। स्कूल एवं महाविद्यालय के छात्रों को हिन्दी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ने की प्रेरणा देनी चाहिए। जब हमारे विद्यार्थी हिन्दी प्रेमी बन जायेंगे तब हिन्दी का धारावाह प्रसार होगा।

जब विश्व के अन्य देश अपनी मातृभाषा में पढ़कर उन्नति कर सकते हैं, तब हमें अपनी राष्ट्रभाषा अपनाने में झिझक नहीं होनी चाहिए।

"जिसमें है मैंने ख्वाब बुने
जिससे जुड़ी मेरी हर आशा है,
जिससे है मुझे पहचान मिली
वो मेरी "हिन्दी भाषा" है।

निगहत अफशां खान
अतिथि विद्वान (हिन्दी)

शीर्षक – "स्थिति को समझे बिना फैसले ना लें।"

गलतफहमी रूपी फंदा इंसान स्वयं अपने गले डालता है जब हम किसी अच्छे विचार को सुनते हैं तो उसको सुनकर हम प्रभावशील नहीं बन सकते जब तक उसको समझकर जानकर आचरण में नहीं लाते है। यदि किसी वात को हम सीधे सुनकर आचरण में लाते है। तो वही हमारे लिए गलतफहमी का फंदा होता है। जिसके वजह से परिवार व रिश्ते बिखरते है। कुत्ता जब किसी सूखी हड्डी को चबाता है तो चबाते ही चला जाता है। दरअसल उस हड्डी में कोई रस नहीं होता उसकी कठोरता के कारण कुत्ते के मसूड़ो से खून निकलता है और अपने ही खून को पीकर वह समझता है मजा हड्डी में है। मानव भी बाहरी परिस्थिति की परख किये बिना अपने आचरण में उसे उतार लेता है और गलत फैसले कर बैठता है। यदि आप भी यही कर रहे मतलब आप स्वान जैसी गलतफहमी का ही जीवन जी रहे इन्हें गलतफहमी की वजह से बिना सच जाने हम अपनो पर दोषारोपण करते हैं और अपने जीवन को दुखों से भर लेते है। जिस प्रकार मुर्ख मांसाहारी पक्षी लाल पत्थरों का समूह देख अपने चोच टूट जाने की बात सोचे बिना उस पर टूट पड़ता है यही स्थिति आप मानव जाति की हो गई है।

अनामिका मिश्रा
अतिथि विद्वान (गणित विभाग)

राष्ट्रीय गीत

स्वर्ग से सुन्दर देश हमारा भारत जिसका नाम।
धरती अम्बर पर्वत नदियाँ है जो इसकी शान।।
हम भारत के रहने वाले भेदभाव न जाने
जाति धर्म को छोड़ के सारे आगे बढ़ना जाने
हम कष्टों को दूर करे हम हो मुश्किल आसान
धरती अम्बर पव्रत नदियाँ है जो इसकी शान
हो हम सबके सत् करमों से रोशन इसका नाम
शक्ति मिले हम सबको यहां पर दे दो यह वरदान
गुलशन बन जाए जग सारा कर दो यह अहसान
धरती अम्बर पर्वत नदियां है जो इसकी शान
जय- जय हिन्द के नारों से हो धरती गुंजीत, आज
इसके नूर को देख हम सब शीश झुकाएं आज
हिन्द का झण्डा ऊँचा उड़ाके मिलकर गाये गान
धरती अम्बर पर्वत नदियाँ हे जो इसकी शान

प्रतिभा भैरम
एम.एस.सी. प्रथम वर्ष
वनस्पति विज्ञान

प्यारी माँ

सब का गम मैं कागज पे लिखती हूँ, आज सोचा कि माँ तेरी दास्तां भी बयान कर दूं वैसे तो मेरी हर सांस तेरी रहमत की मोहताज है मगर मैं आज सबके सामने अपनी जिन्दगी तेरे नाम कर दूं। मैंने अपनी आखों के सामने जब-जब तुझे बिलखता देखी है मां तब-तब अपने दिल को धड़कने से रोका है मुझे याद नहीं वो मंजर बचपन का लेकिन लोगों से ये तेरी दास्तां सुनती बचपन का लेकिन लोगों से ये तेरी दास्तां सुनती आयी हूं तुझे तकलीफों के बदले लाख खुशियां दू मैं। माँ मे ऐसे लाखों सपने आज तक बुनती आयी हूं मैंने सुना है तू अपने एक बेटी को खो कर टूट सी गयी थी। तब कितनी मन्नतों के बाद रब ने मुझे भेजकर तेरी गोद फिर से भरी थी। खुशी से तू कलासिमटी नहीं थी कहते है। वार-बार मेरा माथा चूमती थी। सुना है उस वक्त तूने मेरे लिए खाना पीना छोड़ दिया था मुझे तूने सीने से लगा कर जहान से मुंह मोड़ लिया था। टूटी हुइ छतों पर से जब रातों को पानी टपक था। तव सुना हे माँ जव तेरी ममता का अमृत मुझ पर बरसता था।

दिक्षा राहंगडाले
एम.एस.सी. प्रथम वर्ष
वनस्पति विज्ञान

नारी

ऐ मेरे देश की नारी तू क्यूँ है इतनी बेचारी
तेरी शक्ति तेरी भक्ति तेरा हर एक रूप
बड़ा है तू है दुर्गा तू है काली
सबने ये स्वीकार किया है तू खुद को
पहचानना पाती सारा जीवन यूँ ही
बिताती सबका सब कुछ सुनते सुनते
तू बस खुद से जान छुड़ाती
क्यूँ तू खुद को मान न देती
क्यूँ तू खुद को जान न लेती
तेरी अपनी सोच अलग हे तेरा
खुश रहना भी हक है तेरी भी
कुछ उम्मीदें है तुझको भी सपने
आते हे तू बस सबकी सुनती रहती
सबके आगे सर को झुका के
तू बस दिल का दर्द छिपाती एक
दिन ऐसा भी आएगा सबको सब
कुछ मिल जाएगा। तेरी साग भावना
पर सबका सर भी झुक जायेगा
पर दिल के कोने में बस तेरा
सपना मर जाएगा यूँ तू खुश
कम न होगी। पर उस दिन से
डर लगता है। जब सब खुद में
खो जायेंगे। अपनी बातें अपनी
खुशियाँ तेरी उस दिन जगह
न होगी।
जब तू कुछ कहना चाहेगी। पलट के
एक आवाज आएगी। किसने ये सब
कहा था करने उस दिन बस तू
पछताएगी। एक टीस बस उठ
जाएगीं काश मेरा भी कोई वजूद होता।

कुमारी निशा राहँगडाले
बी.ए. द्वितीय वर्ष

मेरे पापा

सफलता की राह मेरे पापा
सफलता की राह मेरे पापा
जिनकी उंगली पकड़कर मैंने चलना सीखा।
जिनकी आँखों में दिखा मुझे सपना मेरा
सपना पाने की कोशिश में, मैं आगे बड़ा।

आगे बड़ा और पाई सफलता
नाम उनका भी उँचा किया
पापा जिन्होंने दिखाई सही राह
उन्हीं का साथ पाकर हमेशा मैं आगे बड़ा

जिन्दगी उन्हीं की ये दी है हुई
और जिना भी मैंने उन्हीं से सिखा
सिखा ही मुसीबत कितनी भी बड़ी
न झुकना व मुसीवत के सामने कभी।

उनकी हर आज्ञा का ही हूं मैं पालन करता
उनकी से सीखा प्राप्त करना सफलता
छोड़ा था मैं उनकी जिम्मेदारी बना
बड़ा होकर मैं उनका बनूंगा सहारा।

सफलता की राह मेरे पापा, मेरे पापा
सफलता की राह मेरे पापा, मेरे पापा

आकाश विश्वकर्मा
बी.ए. प्रथम वर्ष

स्वयं को ऐसा बनाओ

जहाँ तुम हो
वहाँ तुम्हें सब प्यार करें।
जहां से तुम चले जाओ
वहां तुम्हें सब याद करें।
जहां तुम पहुंचने वाले हो
वहां सब तुम्हारा इंतजार करें।

कभी झगड़ा, कभी मस्ती, कभी आंसू
कभी हंसी छोटा सा पल
छोटी-छोटी खुशी, एक प्यार की कश्ती
और ढेर सारी मस्ती
बस इसी का नाम तो है दोस्ती

एक किताब की तरह हूं मैं
कितनी भी पुरानी हो जाये
पर उसके अल्फाज नहीं बदलेंगे
कभी याद आये तो पन्ने पलटकर देखना
हम आज जैसे है, कल भी
वैसे ही मिलेंगे।

ताकत और पैसा जिंदगी के फल है
परिवार और मित्र जिंदगी की जड़ है
हम फल के बिना अपने आप को चला सकते है
जड़ के बिना खड़े नहीं हो सकते।

संगीता मात्रे
एम.ए. तृतीय सेमेस्टर (समाजशास्त्र)

हम हमेशा दोस्त रहेंगे

हर खुशी तकलीफ
साथ-साथ जिया करते थे।

घर हो या जीत
एक दूसरे का साथ दिया करते थे

कभी तुम हमसे
कभी हम तुमसे रूठ जाया करते थे

फिर हम तुम्हें और
कभी तुम हमें मना लिया करते थे

एक दूसरे की हम
खुद से ज्यादा परवाह किया करते थे

बस कल ही की बात लगती है
हम तुम अपनी दोस्ती पर कितना इतराया
करते थे

यकीन नहीं होता की
वक्त के साथ हालात इतने बदल जायेंगे।

हम अपनी अपनी दुनिया में
इस कदर खो जायेंगे।

एक दूसरे की जिन्दगी में
बस याद बनकर रह जायेंगे।

आरती निषाद
बी.ए. तृतीय वर्ष

ग्रंथालय विभाग

महाविद्यालय का हृदय स्थल ग्रंथालय में सभी विषयों से संबंधी लगभग 15000 पुस्तकें संग्रहित है। पाठ्य पुस्तकों के अलावा सभी विषयों से संबंधित संदर्भ ग्रंथ महाविद्यालय ग्रंथालय में संग्रहित है। ग्रंथालय में विद्यार्थियों हेतु अद्यतन सूचना हेतु लगभग 15 पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से विद्यार्थियों को उपलब्ध कराई जाती है। शासन की योजनानुसार अनु. जाति एवं जन जाति के अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को निःशुल्क पुस्तकें एवं स्टेशनरी उपलब्ध कराई जाती हैं ग्रंथालय के माध्यम से लगभग 1500 छात्र-छात्राओं को पुस्तकें निर्गमित की जाती है। इसके अलावा अन्य पाठ्य सामग्री भी ग्रंथालय से उपलब्ध कराई जाती है।

ग्रंथालय विभाग
ईश्वर राहंगडाले
थानसिंह पारधी

Ho to be successful in life

See your goal
Understand the abstacles
Create a positive mental picture
Clear your mind of self doubt
Embrance the challenge
Stay on trade
Show the word you can do it

If A is a success in life
Then A equals X plass Y Plas Z
Work is X Y is play and
Z is keeping your mouth shout.

Success Always Hugs you
In private
But Failure Always Slaps you
In th public
That's life

Mamta Choudhary
M.Sc. I Sem (Zoology)

एक कदम स्वच्छता की ओर

जब आप किसी महान व्यक्ति की सफलता के बारे में पढ़ते है तो आपका दिमाग आपकी बनायी हुई सीमाओं से परे हो जाता है आपको सभी समस्याएँ छोटी लगने लगती है ओर आप खुद को एक नई और महान दुनिया में पाते है इसीलिए हर रोज महान लोगों की बाते पढ़े और सुने

"अगर कोई आपको नीचा
दिखाना चाहता है तो
इसका मतलब है आप उससे
काफी ऊपर है।"

सौरभ तहेकार
बी.ए. द्वितीय वर्ष (अंग्रेजी साहित्य)

शिक्षा एक ऐसी पूजा जो, कोई बांट न पायेगा।
और नही पढ़ेगा जो कोई बालक, जीवन भर पछतायेगा।

चला गया जो स्वर्णिम अवसर लौट कभी न आयेगा।
देख नौकरी साथी की तू, भौचक्का रह जायेगा।
पूरी दुनिया धूम सकोगे, मैं विश्वास दिलाता हूं।
लक्ष्य आज तुम एक बनाओ यही बात समझाता हूं।
कल पर कोई काम न डालो ये प्लान धरा रह जायेगा।
नहीं पढ़ेगा जो कोई बालक जीवन भर पछतायेगा।
एक कदम आगे जो आया आगे बढ़ता जायेगा।
वाट्सअप और फेसबुक के चक्कर में ना तुम आना
चेटिंग और ट्वीटर का सारा खेल चला है मनमाना
माता-पिता के कर्ज को क्या तू यूं में ही झूठलायेगा।
ओल्ड होम में मां को रखकर सुखी नहीं रह पायेगा।
नहीं पढ़ेगा जो कोई बालक जीवन भर पछतायेंगा।
घर में बूढ़ी मां की आंखे खुशी से नम हो जायेगी।
बहन खुशी में नाचेगी ओर घर भर धूम मचायेगी।
और पिता जी का सीना 56 इंची हो जायेगा।
जिस दिन बेटा कामयाब होकर अफसर बन जायेगा।
कुम्भकर्ण की तरह न सोना कोई नहीं उठायेगा।
नहीं पढ़ेगा जो बालक जीवन भर पछतायेगा।

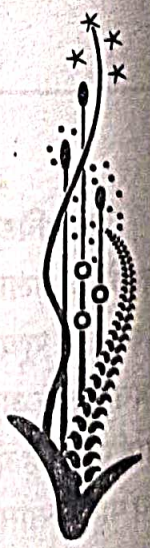

योगेन्द्र गजभिये
लैब टैक्निशियन

हमें संसार सजाना है।

हमें संसार सजाना है।
ऐसा संसार बनाना है।

जहां भूख रहे न बीमारी
जहां भीख रहे न बेकारी
जहां सभी प्रेम से मिल बैठे
ऐसी चौपाल बिछाना है।
ऐंसा संसार बनाना है।

जहां धर्म सभी का एक हो
जहां कर्म सभी सक एक हो।
जहां जात, पात का भेद न हो
ऐसा परिवार बसाना है।
ऐसा संसार बनाना है।

जहां काबा - काशी मिल बैठे
जहां मुल्ला, पण्डित गले मिले।
जहां मंदिर-मस्जिद एक लगे
ऐसा विश्वास जगाना है।
ऐसा संसार बनाना है।

धूल और पत्थर से दूर,
गन्ध और कीचड़ से दूर।
हरित क्रान्ति के लिए,
सभी को वृक्ष लगाना है।
ऐसा संसार बनाना है।
हमें संसार सजाना है।

लता पंचेश्वर
बी.ए. षष्ठ सेमेस्टर

देश का मान

हाथ जोड़कर हम सब बच्चे
देव! मांगते यह वरदान।
विद्या का धन दे दो हम सबको
जिससे बढ़े हमारा ज्ञान
पढ़ लिख कर हम सब बन जाएं
सीधे सच्चे और महान।
काम करे जग में कुछ ऐसे
जिससे बढ़े देश का मान

सबको पढ़ना सिखलाएंगे

शेर, लोमड़ी, भालू, बंदर
मोती ऐनक सभी लगाते
लेकर बस्ता भारी भरकम
नित्य नियम से पढ़ते जाते।
बच्चों पढ़ लिखकर ये चारों
फिर जंगल वापस आयेंगे।
और खोल स्कूल निराला
सबको पढ़ना सिखलाएंगे।।

खेलो कूदो मौज मनाओ
प्रतिदिन सबसे पहले उठकर
प्रभु के सम्मुख शीश झुकाओ
स्वच्छ साफ हो बस्ता लेकर
फिर विद्यालय से लौट शाम को
पहले होमवर्क निपटाओ।
इसके बाद करो जो मन हो
खेलो कूदो मौज मनाओ।।

माया चौधरी
बी.ए. द्वितीय वर्ष

सीखना है तो यह सीखो

बोल सको तो मीठा बोलो, कटु बोलना मत सीखो।
बता सको तो राह बताओ, पथ भटकाना मत सीखो।
जला सको तो दीप जलाओ, दिल जाना मत सीखो।
कमा सको तो पुण्य कमाओ, पाप कमाना मत सीखो।
लगा सको तो बाम लगाओ, आग लगाना मत सीखो।
छोड़ सको तो पाप छोड़ो, चरित्र छोड़ना मत सीखो।
पा सको तो प्यार पाओ, तिरस्कार पाना मत सीखो।
रख सको तो विद्या रखो, बुराई को रखना मत सीखो।
पोंछ सको तो आंसू पोंछो, दिल का दुखाना मत सीखो।
हंसा सको तो सबको हसाओ, किसी पे हंसना मत सीखो।

नेहा कुम्भलकर
बी.ए. द्वितीय वर्ष

आत्मविश्वास

चल तू चला चल, आगे कदम बढ़ा चल,
रूकना नहीं है तुझे, झुकना नहीं है तुझे।
तुम हो एक राही चलना तुझे है
गिरना भी तुझे है, संभलना भी तुझे है।
उठ और निर्णय ले, तू पूर्ण स्वतंत्र है।
चल, चलना ही तो जीवन का मंत्र है।
चल तू चला चल, सब कुछ भुला चल,
रूकना नहीं है तुझे, झुकना नहीं है तुझे।
देखो यहां हर कोई तेरा प्रतिद्वंदी है
हर किसी को आगे बढ़ने की जल्दी है।
बढ़ जल्दी बढ़ - बढ़ते हुए डगमगाना नहीं,
खुद बढ़ना लेकिन बढ़ते हुए को गिराना नहीं।
चल तू चला चल, आसमान उठा चल,
रूकना नहीं है तुझे, झुकना नहीं है तुझे।
जीवन क्या है? बस क्षणिक बुलबुला है।
बंद है उम्र की दहलीजों में, फिर भी खुला है।
उम्र के किसी पड़ाव पर धैर्य तू खोना नहीं,
कितनी भी कठिन हो राहों कभी तू रूकना नहीं।
चल तू चला चल, मस्ती में गुनगुना चल,
रूकना नहीं है तुझे, झुकना नहीं है तुझे।
अलग - अलग रफतार से चलते तू रहना,
समय के हिसाब से बदलते तू रहना।
जीत के लिए लगातार चलना एक मंत्र है
बदल, बदलाव भी अद्भूत यंत्र है।
चल तू चला चल, करदे कुछ हलचल
रूकना नहीं है तुझे, झुकना नहीं है तुझे।
जीवन की पाठशाला में नाम लिखवा लो,
अपने आप को तुम, सुपरस्टार बना लो।
सुना है कि जिंदगी हमें अच्छे पाठ पढ़ाती है
ये जो जिंदगी है रोज कुछ नया दे जाती है।
चल तू चला चल वीरता से बढ़ा चल
रूकना नहीं है तुझे, झुकना नहीं है तुझे।
चाहे सारे जमाने का दामन छूट जाए
पर उम्मीदों का दामन छूटने न दो,
चाहे आसमां का सूरज बुझ जाए
पर मन का सूरज बुझने न दो।

फरीन खान
बी.ए. पंचम सेमेस्टर

माँ की दुलारी

हजारों फूल चाहिये एक माला बनाने के लिये
हजारों दीपक चाहिये एक आरती सजाने के लिये,
हजारों बूंद चाहिये समुद्र बनाने के लिये,
माँ अकेली ही काफी है
बच्चों की जिंदगी को स्वर्ग बनाने के लिये।

मेरी चाहत को जो जहाँ में वो मेरी माँ है।
मेरी जमीन का जो आसमान है वो मेरी माँ है।
मेरा सब कुछ जिस का नाम है वो मेरी माँ है।
हंसी मेरी जिस की वजह से है वो मेरी माँ है।

हमारी कुछ गुनाहों की सजा भी साथ जलती है।
हम अब तन्हा नहं चलते दुआ भी साथ चलती है।
अभी जिन्दा है, मेरी माँ मुझे कुछ भी नहीं होगा।
मैं घर से जब निकलती हूं दुआ भी साथ चलती है।

माँ ना होती तो वफा कौन करेगा।
ममता का हक भी कौन अदा करेगा।
रब हर एक माँ को सलामत रखना
वरना हमारे लिए दुआ कौन करेगा।

प्यार करना कोई तुम से सीखे
दुलार करना कोई तुम से सीखे
तुम हो ममता की सूरत दिल में
बैठाई है ये सूरत
मेरे दिल का बस यही है कहना
ओ, माँ तुम बस ऐसा ही रहना।

अनमोल वचन

इस तरह न कमाओ कि पाप हो जाए।
इस तरह न खर्च करो कि कर्ज हो जाए।
इस तरह न खाओ कि मर्ज हो जाए।
इस तरह न बोलो कि क्लेश हो जाए।
इस तरह न चलो कि देर हो जाए।
इस तरह न सोचो कि चिन्ता हो जाए।

निकिता ठाकरे
बी.ए. द्वितीय वर्ष

माता - पिता

माता - पिता हमारे हमको
प्राणों से भी प्यारे है।
हम ी उनकी हीरा मोती
उनके राज दुलारे है।
माता हमको पाल पोसती
मीठा दूध पिलाती है।
कभी जरा बीमार हुये तो,
झटपट दवा पिलाती है।
पिता हमारे शीत धाम में
काम बाहरी करते है।
कितनी मेहनत करके अपने
बच्चों को खुश करते है।

फूल बिछाए प्यार के जिन्होंने
तुम्हारी राहों पर
सदा रखा तुझको हर-पल
बिछाए पलको पर।
भले ही हर बात भूल जाइए।
मां - बाप को भूलना नहीं,
अनगिनत है। उपकार इनके
यह कभी भुलाना नहीं।
दौलत से हर चीज मिलेगी
लेकिन माँ बाप नहीं
इनके पवित्र चरणों के प्रति
सम्मान कभी भुलाना नहीं।

रोशनी कुम्भलकर
बी.ए. षष्ठ सेम.

पिता - पुत्र

पितृ स्नेह से वंचित हूं, तालविहीन एक बालक जैसे
मुझे ममतामयी पालना मिली, माँ का कॉलेज पालक जैसे
इस व्यथा का कारण मिले, किताबों में वो पन्ना नहीं है।
खोज रहा हूं परिवार अपना दूसरी कोई तमन्ना नहीं है।
अधूरा अरमां पूरा करने मैं भी विद्यालय जाता हूं।
नाम पिता का पूछने पर, सीना तान के बताता हूं।
नियति मेरी इतनी है तुम्हारे चरणों में नतमस्तक होगा
द्वार खुले है आलिंगन के, जाने कब दस्तक होगा
मैं फूल तुम्हारे चमन का, मेरे माली पौधों में पानी नहीं है।
कह सकोगे क्या संसार से, तू मेरे प्यार की निशानी नहीं है।
निशां दिखता है बस तनाव का, तू ले ले सहारा एक नाव का
वो धूल मेरे माथे पर हो, जहां पड़े कदम तेरे पावं का
तू आजा मेरे साहिल पर, डूबने वाली मेरी कश्ती है।
यहां भी गांव, यहां भी बस्ती, यहां भी जीवन की हर मस्ती है।
शिकवा शिकायत नहीं मुझे, सब समय-समय का फेर है।
नहले पे यहां दहला मिलता शेर पर यहां सवा शेर है
मेरे प्यार का यह पैगाम है, मम्मी का प्रार्थना पत्र नहीं है।
तुम्हें और भी पुत्र मिल जायेंगे, मुझे पिता कहीं अन्यत्र नहीं
अधिकार अपना जताता हूं, मुझे पुत्र-स्नेह से न वंचित करो
लुटाता हूं अपना प्यार अनन्थ, जितना चाहो संचित करो
संघर्ष केवल अपने अपने चुनौती जो हमें मिले है।
बस एक पथ के साथ बने, फिर अनेकों द्वार खुले है।
पिता-पुत्र के इस संगम में स्नेहिल धारा बहने लगेगी
साथ तुम्हारे हंसी खुशी फिर से मम्मी रहने लगेगी
दूर हटेगा बरसो का, सूनापन मिलन पर्व से
अश्रु से सिंचित आंखे, खिल उठेगा गर्व से
इसी उत्साह की चाह में, चलता हूं अविरत गीत से
पूछता हूं नियति से, कब मिलेगी मम्मी अपने पति से।

राजू विश्वकर्मा
वनस्पति शास्त्र विभाग

आज का समय

पुस्तकें है पर - उपयुक्त नहीं
पढ़ाई है पर - ज्ञान नहीं
डिग्री है पर - नौकरी नहीं
बाबू है पर - काम नहीं
बादल है पर - बरसात नहीं
फिल्म है पर - शिक्षाप्रद नहीं
प्रेम है पर - त्याग नहीं
साधन है पर - सस्ते नहीं
हिन्दुस्तान है पर - हिन्दी नहीं
योग्यता है पर - मूल्यांकन नहीं
मित्र है पर - मित्रता नहीं
भाई है पर - भातृत्व नहीं
पूजा है पर - श्रृध्दा नहीं
नेता है पर - त्याग नहीं नेतृत्व नहीं।

रोशनी कुम्मलकर
बी.ए. षष्ठ सेमेस्टर

मंजिले

उद्देश्यहीन पथ पर चले
गुमराह राह नजदीक है।
जीवन से तुम भटक गये,
राहें चुनी है तुमने
पतन तो अब निश्चित है।
पथहीन राहों में सोचते
मंजिले तो पास है।
पर खेद तो, इस बात का
तू मंजिलों से दूर है।

तस्वीर दी तकदीर दी
हर सोच दी इंसान को।
गुमराह तो वो शख्स है,
हम दोष क्यों दे भगवान को।

गर इरादे हो बुलन्द
चुमे कदम हर मंजिले।
फर्क हो इस देश को
जब तेरी पहचान करे।।

वर्षा अगासे
बी.कॉम प्रथम वर्ष

पिता

चलते चलते न थे ऐसे पिता के पाँव।
उससे मिलकर लगा जैसे बरगद की छांव।।
श्रम करते करते न थके है उनका ऐसा मन
चाह कोई बया पाएगा, सागर सा गहरा मन
बच्चे के सुख की खातिर, दिन देखे रात
लाने तैयार खड़े है सदा, हर सुख की सौगात
पूरा जीवन अर्पण किया, बच्चों को इंसान बनाने में।
बातों में कितनी गहराई थी, आती है याद तन्हाई में

पिता बने तब समझ आया
पीड़ा क्या होती है बाप की
ईश्वर को नहीं देखा हमने
उनसे मिलती होगी सूरत तात की।।

पिता नहीं है जिसके पूछे, उनके दिल का हाल।
नैन भींग जाते हैं उनके हो जाते है वे बेहाल।
जब तक वे जीवित थे, चिंता नही थी किसी बात की।

सीमा बिसेन
एम.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर

जीवन क्या है।

जीवन कर्तव्य की पुकार है उसका पालन करो।
जीवन एक उपहार है उसे स्वीकार करो।

जीवन एक साहसिक कार्य है सफलता प्राप्त करो।
जीवन एक क्रीडा स्थली है मन लगाकर खेलो।।

जीवन एक संगीत है सब मिलकर गान करो।
जीवन एक प्रतिभा है सत्य रूप से पालन करो।

जीवन एक स्वर्ग अवसर है उचित लाभ उठाओ।
जीवन एक रहस्य है उसके रहस्य को खोलो।

जीवन एक प्रेम पंथ है उसका आनन्द उठाओ
जीवन सौंदर्य से भरा है उसका गुणगान करो।

जीवन एक दुखान्त घटना है उसका मुकाबला करो।
जीवन एक महान यात्रा है सफलतापूर्वक पूरा करो।।

जीवन एक अनुभूति है जी भरकर अनुभव करो।
जीवन एक महासंग्राम है उसमें विजय प्राप्त करो।।

जीवन एक पहेली है उसे बुध्दि से हल करो।
जीवन एक महान लक्ष्य है प्राप्ति का सदा प्रयत्न करो।

जीवन आखिर जीवन है।

मीनाक्षी चौधरी
बी.ए. प्रथम वर्ष

मिट्टी का खिलौना मिट्टी में मिल जाएगा

मान मेरा कहना नहीं तो पछताएगा
मिट्टी का खिलौना मिट्टी में मिल जाएंगा
माता-पिता तेरा कुटुम्ब कविता
विपदा पड़े पर कोई न किसी का
एक दिन हँसा तेरा अकेला उड़ा जाएंगा।
मिट्टी का खिलौना मिट्टी में मिल जाएंगा।

बेटा - बेटा क्या करता है।
बेटा तेरा एक दिन पड़ोसी बन जाएंगा।
मिट्टी का खिलौना मिट्टी में मिल जाएंगा

बेटी-बेटी क्या करता है
बेटी तेरी एक दिन जमाई ले जाएंगा।
मिट्टी का खिलौना मिट्टी में मिल जाएंगा

पड़ोसी - पड़ोसी क्या करता है
पड़ोसी तो एक दिन जला के चला आएंगा।
मिट्टी का खिलौना मिट्टी में मिल जाएंगा

धन-दौलत तेरी कोठी बंगले
इनसे ममता छोड़ दे पगले
सब कुछ तेरा यही रह जाएंगा
मिट्टी का खिलौना मिट्टी में मिल जाएंगा

मनुष्य जनम तूने पाया रे बन्दे
करम न कर तू जग में गन्दे
जैसा बीज बोया है वैसा फल पाएंगा
मिट्टी का खिलौना मिट्टी में मिल जाएंगा

रागिनी पटले
एम.एस.सी. प्रथम वर्ष
वनस्पति विज्ञान

बाल-विवाह पर मेरा विचार

बाल-विवाह दुष्कर्म से भी बड़ा जुर्म माना जाता है।

इस प्रकार बाल - विवाह करने से कानून की बदनामी होती है। हमारे देश में कई बुराईयाँ है। जिसमें से एक जुर्म बाल-विवाह भी माना जाता है। उन नादान छोटे-छोटे बच्चों का बाल-विवाह कर दिया जाता है। जिन्हें शादी का अर्थ भी सही से पता नहीं होता जो कि उन बच्चों को हमें बताना चाहिए की बाल-विवाह एक अभिशाप है।

पर हम ऐसा कुछ न करने की वजह उन छोटे बच्चों का बाल-विवाह करा दिया जाता है। जिन्हें शादी, पति-पत्नि के रिश्तों की कोई अहमियत नहीं होती।

उनके खेलने - कूदने, पढ़ने - लिखने की उम्र में हम उनको शादी जैसी पवित्र बंधन में बांध देते है। उनकी जीवन को बाल-विवाह जैसी अभिशाप को छोटे बच्चों के जीवन में डाल देते है। जिन्हें सही-गलत क्या उनको मालूम नहीं, बाल-विवाह करने से शादी एक मजाक बन जाता है। बाल-विवाह करके हम उन नन्हे बच्चों का भविष्य अंधकार की ओर डाल देते है। बाल-विवाह करके हम कन्यादान जैसी शब्द का प्रयोग करते है।

हमें ऐसा अभिशाप से उहें बचाना ही हमारा सबसे बड़ा धर्म है। बाल-विवाह को खत्म करना ही सुगम-जीवन की शुरूआत है। कानून कहता है, कि लड़की की आयु 18-20 वर्ष की, लड़के की आयु 20-22 वर्ष का होना अनिवार्य माना जाता है।

"न करो दूर व्यवहार महिला-पुरूष सब एक समान।"

संजना हरडे
बी.ए. प्रथम वर्ष

कुछ स्थानों के भौगोलिक उपनाम

ईश्वर का निवास स्थल	-	प्रयाग
अंतरिक्ष का शहर	-	बंगलौर
पृथ्वी का स्वर्ग	-	श्रीनगर
भारत का डेट्राइट	-	पीथमपुर
पहाड़ों की मल्लिका	-	नेत्तरहाट
भारत का पेरिस	-	जयपुर
पर्वतों की नारी	-	मसूरी
भारत का हॉलीवुड	-	कोलकाता
ब्लू माउन्टेन	-	नीलगिरी पहाड़िया
एशिया की अण्डों की टोकरी	-	कर्नाटक
सर्वाधिक प्रदुषित नदी	-	साबरमती
सुपर प्रसारित नगर	-	चेन्नई
कोयला नगरी	-	धनबाद
सेव की नगरी	-	रतलाम
मूर्तियों का नगर	-	उज्जैन

महिमा गौतम
बी.ए. द्वितीय वर्ष

Founders of Social Media

1.	Google	-	Lorry Page & Sergey Brin
2.	Facebook	-	Mark Zuckerberg
3.	Yahoo	-	Jerry Yang & David Filo
4.	I-Phone	-	Steve Jobs
5.	Samsung	-	Lee Byung - chul
6.	Amazon	-	Jeff Bezos
7.	E-mail	-	Raymond Samuel Tomlinson
8.	Twitter	-	Jack Dorsey Noah glass Biz Stone Evan williams
9.	Whatsapp	-	Brian Acton & Jan Koum
10.	Instagram	-	Kevin Systrom
11.	Android	-	Andy Rubin Rich Miner Nick Sears
12.	Snapchat	-	Evan Spiegel Bobby Murphy Reggie Brown
13.	Microsoft	-	Bill Gates Paul olten
14.	Youtube	-	Jawed Karim Steve chen chad harley
15.	Founder of Skype	-	Niklas Zennstorm Janus Friis

1.	Dr. Rajendra Prasad	-	26.01.1950	-	13.05.1969
2.	Dr. S. Radhakrishnan	-	13.05.1962	-	13.05.1967
3.	Dr. Zakir Husain	-	13.05.1967	-	03.05.1969
4.	V.V. Giri	-	24.08.1974	-	11.02.1977
5.	Fakhruddin ali Ahmad	-	24.08.1974	-	11.02.1977
6.	Neelam Sanjeev Reddy	-	25.07.1977	-	25.07.1982
7.	Gyanee Jail Singh	-	25.07.1977	-	25.07.1987
8.	R. Venkatraman	-	25.07.1987	-	25.07.1992
9.	Dr. Shankar Dayal Sharma	-	25.07.1992	-	25.07.1997
10.	K.R. Narayan	-	25.07.1997	-	25.07.2002
11.	Dr. A.P.J. Abdul Kalam	-	25.07.2002	-	25.07.2007
12.	Pratibha Patil	-	25.07.2007	-	25.07.2012
13.	Pranav Mukharji	-	25.07.2012	-	25.07.2017
14.	Ramnath Kovind	-	25.07.2017	-	

Durgeshwari Patil
M.Sc. (Batony) 1st year

भारत की प्रमुख झीलें

1.	डल झील	–	जम्मू कश्मीर
2.	वुलर झील	–	जम्मू कश्मीर
3.	बैरीनाग झील	–	जम्मू कश्मीर
4.	मानस बल झील	–	जम्मू कश्मीर
5.	नागिन झील	–	जम्मू कश्मीर
6.	शेष नाग झील	–	जम्मू कश्मीर
7.	अनंतनाग झील	–	जम्मू कश्मीर
8.	राजसमंद झील	–	जम्मू कश्मीर
9.	पिछौला झील	–	राजस्थान
10.	सांभर झील	–	राजस्थान
11.	जयसमंद झील	–	राजस्थान
12.	फतेहसागर झील	–	राजस्थान
13.	डीडवाना झील	–	राजस्थान
14.	लूनकरनसर झील	–	राजस्थान
15.	सातताल झील	–	उत्तराखंड
16.	नैनीताल झील	–	उत्तराखंड
17.	राकसताल झील	–	उत्तराखंड
18.	मालाताल झील	–	उत्तराखंड
19.	देवताल झील	–	उत्तराखंड
20.	नौकुछियाताल झील	–	उत्तराखंड
21.	खुरपताल झील	–	उत्तराखंड
22.	हुसैनासागर झील	–	आंध्रप्रदेश
23.	कोलेरू झील	–	आंध्रप्रदेश
24.	बेम्बनाड झील	–	केरल
25.	अष्टमुदी झील	–	केरल
26.	पेरियार झील	–	केरल
27.	लोनार झील	–	महाराष्ट्र
28.	पुलीकट झील	–	तमिलनाडु एवं आंध्रप्रदेश
29.	लोकटक झील	–	मणिपुर
30.	चिलका झील	–	उड़ीसा

ज्योति राहंगडा
बी.ए. द्वितीय वर्ष

मध्यप्रदेश का सामान्य ज्ञान

एक नजर में...

1.	मध्यप्रदेश के प्रथम राज्यपाल	-	डॉ. पट्टाभि सीतारमैया
2.	प्रथम महिला राज्यपाल	-	सुश्री सरला ग्रेवाल
3.	म.प्र. के प्रथम मुख्यमंत्री	-	पं. रविशंकर शुक्ल
4.	प्रथम महिला मुख्यमंत्री	-	सुश्री उमा भारती
5.	म.प्र. उच्च न्यायालय के प्रथम मुख्य न्यायाधीश	-	मो. हिदायतुल्ला
6.	प्रथम विधानसभा अध्यक्ष	-	कुंजीलाल दुबे
7.	प्रथम राज्यपाल निर्वाचन आयुक्त	-	एन.बी. लोहानी
8.	प्रथम लोक सेवा आयोग अध्यक्ष	-	डी.बी. रेड्डी
9.	प्रथम राष्ट्रीय उद्यान	-	कान्हा किसली
10.	प्रथम अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा	-	भोपाल
11.	म.प्र. के अन्य नाम	-	टाईगर स्टेट, सोया स्टेट, हृदय प्रदेश, मध्य भारत, लघु भारत, नदियों का मायका, सेंट्रल प्रोविस बरार।
12.	म.प्र. की राजधानी	-	भोपाल
13.	म.प्र. का स्थापना दिवस	-	1 नवम्बर 1956
14.	म.प्र. का राजकीय पुष्प	-	सफेद लिली
15.	म.प्र. का राजकीय पक्षी	-	दूधराज
16.	म.प्र. का राजकीय वृक्ष	-	बरगद
17.	म.प्र. की राजकीय मछली	-	महाशीर
18.	म.प्र. की राजकीय नाट्य	-	माच
19.	म.प्र. का राजकीय नृत्य	-	राई
20.	म.प्र. की राजकीय फसल	-	सोयाबीन
21.	म.प्र. का राजकीय खेल	-	मलखंब
22.	म.प्र. में विधानसभा सदस्य संख्या	-	230
23.	म.प्र. में लोकसभा सदस्य संख्या	-	29
24.	म.प्र. में राज्यसभा सदस्य संख्या	-	11
25.	म.प्र. विधानसभा को किस नाम से जाना जाता है-		इंदिरा भवन

अश्विनी हनवत
बी.ए. द्वितीय वर्ष

वर्तमान में भारत के राज्यों के मुख्यमंत्री एवं राज्यपाल

	राज्य	राज्यपाल	मुख्यमंत्री
1.	जम्मू कश्मीर	सत्यपाल मलिक	राज्यपाल शासन
2.	हिमाचल प्रदेश	आचार्य देवतृत	जयराम ठाकुर
3.	पंजाब	वी.पी. सिंह षनौट	कैप्टन अमरजीत सिंह
4.	हरियाणा	सत्यदेव नारायण आर्य	मनोहर लाल खट्ट
5.	उत्तराखंड	बेबी रानी मोरीया	त्रिवेन्द्र सिंह रावत
6.	उत्तरप्रदेश	राम नायिक	आदित्य योगी नाथ
7.	बिहार	लाल जी टन्डन	नीतिश कुमार
8.	झारखण्ड	द्रोपदी मोरम	रघुवर दास
9.	पश्चिम बंगाल	केशरीनंदन त्रिपाटी	ममता बनर्जी
10.	सिक्किम	गंगा प्रसाद	पवन चामलीन
11.	असम	जगदीश मुखी	सरबान्डू सोनेवाला
12.	अरूणाचल प्रदेश	बी.डी. मिश्रा	पेमा खण्डु
13.	नागालैंड	पी.सी. आचार्य	नेफ्यू रियो
14.	मणिपुर	निजमा हैजतुला	एन बीस सिंह
15.	मिजोरम	कुमारमान राजशेखरन	जोरमधानगा
16.	त्रिपुरा	कप्तानसिंह सोलखी	बीपलाल कुमार देव
17.	मेघालय	तथागत राय	कौनराड्संगमा
18.	राजस्थान	कल्याण सिंह	अशोक गेहलोत
19.	गुजरात	ओमप्रकाश कोहली	विजय रूपानी
20.	मध्यप्रदेश	आनंदी बेन पटेल	कमलनाथ
21.	छत्तीसगढ़	आनंदी बेन पटेल	भूपेश बघेल
22.	उड़ीसा	गणेशीलाल	नवीन पटनायक
23.	महाराष्ट्र	सी. विद्यानागरराव	देवेन्द्र फडनवीश
24.	तेलंगाना	ई.यस.एल. नरसिम्माह	चन्द्रशेखर राव
25.	आंध्रप्रदेश	ई. एस.एल. नरसिम्माह	एन. पन्द्र बाबू नायडू
26.	कर्नाटक	वजु भाई वाला	एच.पी. कुमार स्वामी
27.	तमिलनाडु	बनवारीलाल पुरोहित	के. पलानी स्वामी
28.	केरल	पी. सदाशिवम्	पी. विजयान
29.	गोवा	मितृला सिन्हा	मनोहर परिकार

केन्द्र शासित प्रदेश के उपराज्यपाल एक प्रशासक

राज्य	मुख्यमंत्री	उपराज्यपाल
दिल्ली	अरविंद केजरीवाल	अनिल बेजाल
पांडीचेरी	वी. नारायण स्वामी	किरण बेदी
अण्डमान निकोबार		डी.के. जोशी
चंडीगढ़	प्रशासक	वी.पी. सिंह सदनौर
दादर और नागर हवेली	प्रशासक	प्रफुल्ल पटेल
दमन दीप	प्रशासक	प्रफुल्ल पटेल
लक्ष्यदीप	प्रशासक	फारूख खान

भारत में वर्तमान में कौन क्या है।

राष्ट्रपति	–	रामनाथ गोविन्द
उपराष्ट्रपति	–	श्री वैंकैया नायडू
मुख्य न्यायाधीश	–	जस्टिस रंजन गोगोई
मुख्य चुनाव आयुक्त	–	ओमप्रकाश रावत
रेल्वेबोर्ड के चेयरमेन	–	अश्विनी लोहानी
नीति आयोग के चेयरमेन	–	नरेन्द्र मोदी
लोकसभा अध्यक्ष	–	श्रीमती सुमित्रा महाजन
राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार	–	अजीत डोमाल
महान्याय वादी	–	के.के. वेणुगोपाल
रिजर्व बैंक के गवर्नर	–	उरजीत पटेल
वायु सेना अध्यक्ष	–	बी.एस. धनोआ
थल सेना अध्यक्ष	–	ले जनरल बिपिन रावत
नौ सेना अध्यक्ष	–	एड. मिटल सुनील लाम्बा
स्टेट बैंक केन्द्राध्यक्ष	–	रजनीश कुमार
आई.सी.सी. के अध्यक्ष	–	शशांक मनोहर
वी.सी.सी.आई. के अध्यक्ष	–	सी.के. खन्ना

अनिल कुमार मेश्राम
एम.ए. फाईनल (राजनीति शास्त्र)

स्वयं सहायता समूह और महिला सशक्तिकरण

भारत में महिला सशक्तिकरण की पहल 19 वी शताब्दी से प्रारम्भ हुई जो निरन्तर जारी है। परिवर्तन इस दिशा में आशा है किन्तु आज भी महिलाएँ लैंगिक भेदभाव असमानता की शिकार है। इस परिप्रेक्ष्य में लोगों के जीवन स्तर के उन्नयन के लिए स्वयं सहायता समूह एक वरदान साबित-हुआ है। भारतीय गांवो में स्व-सहायता समूह आन्दोलन बड़े पैमाने पर शुरू हो चुका है। वर्ष 1992 में जहाँ 500 स्व सहायता समूह थे। ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण का नया कारगर औजार माना जाने लगा है। महिला स्वसहायता समूह तंगहाली व गरीबी से बुझती महिलाओं के लिए नव जीवन का संदेश लेकर आयी है। स्व सहायता समूह से जुड़कर महिलाएं एक - दूसरे की मदद करके जीवन चुनौतियों का समाधान ढूंढने में समर्थ हुई है। स्वयं सहायता समूह महिला सशक्तिकरण के लिए आवश्यक आधार तैयार करता है। समूहों से जुड़कर महिलायें शिक्षा स्वरोजगार कानूनी अधिकार, सरकार द्वारा चलायी जा रही कल्याणकारी योजनाओं, स्वास्थ्य व पोषण के बारे में जानकारी प्राप्त करती है।

ग्रामीण परिवार न केवल खेती बाड़ी के लिए बल्कि निजी पारिवारिक और सामाजिक जिम्मेदारियाँ पूरी करने के लिए भी सूदखोर ऋण व्यवस्था पर निर्भर रहे है।

बैंकों से कृषि तथा अन्य गतिविधियों के लिए किसानों को कम ब्याज पर कर्ज दिलाने के लिए कई कदम उठाये है।

इन समूहो के जरिए बचत की आदत महिलाओं में नए तरह की आर्थिक जागरूकता पैदा करती है। स्वसहायता समूह से प्राप्त धन का इस्तेमाल सामान्य व्यवसायिक गतिविधियों जैसे - पशुपालन, मछली पालन, अगरबत्ती निर्माण, बीड़ी निर्माण, लाख व्यवस्था, दलिया निर्माण और छोटे - मोटे काम धन्धे शुरू करने के लिए भी किया जाता है।

महिला सशक्तिकरण एवं आत्मनिर्भरता में काफी मददगार साबित होने वाली शासन की योजना है। स्वयंसिध्द, स्वालंबन स्वधार इंदिरा गांधी महिला योजना, महिला सक्षम आदि, इस सच्चाई से इंकार नहीं किया जा सकता कि महिलाओं को अधिक और सामाजिक स्थिति में सुधार लाए बिना समाज की उन्नति का सपना पूरा नहीं हो सकता और समाज की उन्नति में ही देश की उन्नति है।

"मेहनत इतनी खामोशी से करो।
कि सफलता शोर मचा दे।"

किताब

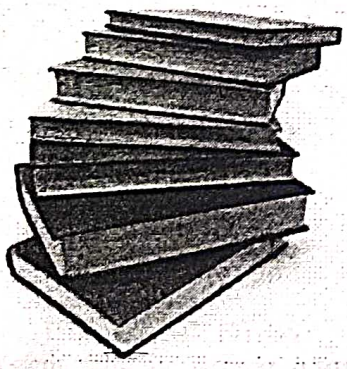

किताब की खुशबू हर खुशबू से अलग है।
किताब एक आदत है, किताब एक सभ्यता
किताब एक लेख एक रिकार्ड है।
किताब सच्चा साथी है।
किताब ज्ञान का भण्डार है।
यदि किताब से दोस्ती की आदत हो तो
जिन्दगी किताब हो जाती है और पन्ने
पढ़ते पढ़ते जिन्दगी आसानी से
कट जाती है।

कुमारी सुनिता वाघाड़े
एम.ए. तृतीय सेमेस्टर
समाजशास्त्र

समय का मोल

जब व्यक्ति स्वयं अपने जीवन का मोल नहीं समझता, उसको बनाए रखने के प्रयास नहीं करता, तब दुनिया में कौन दूसरा उसके लिए चिंतित होगा? जीवन-मूल्यों का कार्य जीवन का मूल्य बनाए रखना है।

आज व्यक्ति सुबह से शाम तक इतना व्यस्त प्रतीत होता है कि उसे कहीं रूककर यह सोचने का समय भी नहीं है कि उसका रास्ता उसके लिये आगे जाकर सही निकलेगा या नहीं। मार्ग भटक जाने पर रूककर किसी राहगीर से पूछा भी जाता है लेकिन आज पूंछना भी अपने किसी राहगीर से पूछा भी जाता है लेकिन आज पूंछना भी अपने आप में एक शर्म की बात लगती है।

हमें हमारे समय की कीमत का भी एहसास नहीं है हम कहते हैं जवानी बार-बार नहीं आती। जीवन का मक्खन कहते है इसको। जो कुछ इस उम्र में बोते हैं, उसी का फल पूरी उम्र में खाते है। इसका तो एक-एक पल कीमती है। और, हम घंटों लगा देते है। ऐसे कार्मों में जहाँ इसकी कीमत ही नहीं रहती।

हमने जवानी को मनोरंजन बना दिया। अवकाश की अवधारणा से जोड़ दिया। यह काल तो तपने का है निखरने का है। उफान होना चाहिए। शिखर छूने से कम कुछ सोचना ही क्यों चाहिए? सर्वश्रेष्ठ काल को सर्वश्रेष्ठ उपयोग में लेना चाहिए। यदि यह जागरूकता नहीं है तो सही बुध्दि का अभाव है। पशु की तरह शरीर में ही उलझकर रह जायेंगे। शिखर के बजाए तलहटी में ही जीवन कट जाएगा।

जिस प्रकार बिना भूख लगे खाने से कष्ट हो जाता हैं। उसी प्रकार प्रसन्न मन को रंजन में लगा देने का भी अच्छा परिणाम नहीं आता। मन भटक जाता है, प्रमादी हो जाता है। जब मन दुःखी हो, बोझ से दबा हो, अवसादग्रस्त या थका हो, तभी मनोरंजन की आवश्यकता होती है। आज जिस प्रकार रंजन हो रहा है। वह तो मन तक पहुंचता ही नहीं। तब, क्या हम शरीर का रंजन करते है?

आज हमारी पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ गंभीरता से दूर होने लगी। न अच्छा देखते हैं, न अच्छा सुनते है, अच्छा खाते भी नहीं। अनावश्यक सामग्री ने हमें चारों ओर से घेर रखा है। हमारा ज्ञान इस आवरण को तोड़ ही नहीं पाता। क्या ज्ञान और शिक्षा दिशा का भ्ज्ञान ही नहीं हो पाता है। हम जीवन का उद्देश्य ही तय नहीं कर पाते। इसके बिना मार्ग कहां तय होगा।

लेकिन इतना तो हम आज ही तय कर सकते हैं, कि हम अनावश्यक कुछ नहीं करेंगे। समय का रचनात्मक रूप में ही काम लेंगे। समय लौट कर नहीं आता। समय ही तो जीवन है। इसको दूसरों की मर्जी पर छोड़ा भी नहीं जा सकता ह। किसी को यह अधिकार नहीं है कि मेरे जीवन का हिस्सा बेकार कर दे।

तो आओ, संकल्प करें, जीवन को सार्थकता देंगे। ऊँचे सपने देखेंगे जवानी फिर लौटकर नहीं आएगी। जीवन को ऊचाइयाँ देने का यही समय है। कई असुर शक्तियां हमारे मार्ग में आएगी। हमें उनसे लड़ते हुए आगे बढ़ना है। उनके मायाजाल में फंसना नहीं है। यह तो हार होगी। इस उम्र में हार कैसे स्वीकार हो सकती है? हमें तो कुछ कर गुजरना है जीवन को पहचान देनी है।

आज प्रबन्धन के गुरू कहते हैं कि जो कुछ करो, परिणाम को ध्यान में रखकर करो। यही बात तो आपके कार्यों को और जीवन को सार्थकता देती है। परिणाम ही लक्ष्य बनता है, उसी तरह का मन में वातावरण बनाया जाता है, उसी तरह का व्यक्तित्व बन जाता है। अतः जीवन का एक लक्ष्य तो यह होना ही चाहिए - घटिया विषय से दूरी और सर्वश्रेष्ठ का चुनाव।

कु. कृष्णा उइके
एम.ए. प्रथम वर्ष

डॉ. भीमराव आम्बेडकर

डॉ. भीमराव आम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को मध्यप्रदेश के यहूनगर में हुआ था। उनके पिता का नाम रामजी तथा माता का नाम भीमाबाई था। इनके पिता सकपाल सेना के सूबेदार थे तथा माता भीमाबाई अत्यधिक धार्मिक विचारों वाली महिला थी।

इनके घर जन्मी यह 14 वी संतान थी जब भीमराव 5 वर्ष के थे तब उनकी माता का स्वर्गवास हो गया तब इनका लालन-पालन मीराबाई ने किया और वह प्यार से भीमा कहकर बुलाया करती थी। बाद में वह बालक बड़ा होकर भीमराव रामजी आम्बेडकर कहलाये। इनका विवाह 1905 में रमाबाई नाम की कन्या के साथ हुआ तब वह केवल 9 वर्ष की थी। जब भीमराव को सरकारी स्कूल में भर्ती कराया गया। वहां उनके अछूत होने के कारण सब लड़कों से दूर रखा जाता था। अध्यापक उनकी अभ्यास पुस्तिका तक को नहीं छूते थे। वे संस्कृत विद्वान होकर व फारसी पढ़ने लगे। विद्यालय में दिनभर उन्हें प्यासा रहना पड़ता था। इस महापुरूष को बचपन से ही छुआछुत की बुराईयों का शिकार होना पड़ा। इतना ही नहीं वह विदेश से उच्च शिक्षा प्राप्त कर लेने के बाद भी छुआछुत के शिकार हुए।

बाबा साहब ने सन् 1927 को एक महिला सभा का आयोजन किया। बाद में डॉ. आम्बेडकर ने विदेशों में जाकर शिक्षा प्राप्त की पर उन्होंने कभी भी मद्यपान और धूम्रपान का सेवन नहीं किया वे शालीन विचारों और शुध्द आचरण वाले व्यक्ति थे। डॉ. आम्बेडकर की माता भी धार्मिक विचारों वाली महिला थी। उनका परिवार कबीर पंथी था। उनके परिवार में नित्य भजन-पूजन होता था।

डॉ. भीमराव आम्बेडकर का जीवन अनेक विशेष गुणों से परिपूर्ण था। उनमें साहस, सरलता, संघर्ष एवं संवेदनशीलता कूट-कूटकर भरी हुई थी। इन्ही गुणों के कारण इन्हें महापुरूष भी कहा जाता है।

डॉ. आम्बेडकर हिन्दु धर्म के विरोधी नहीं थे। वे डॉ. आम्बेडकर किसी भी धर्म के विरोधी नहीं थे। वे धर्म को मनुष्यों के लिए बहुत आवश्यक मानते थे। उनकी लड़ाई तो केवल उन बुराईयों से थी। जिन्हें मनुष्य ने धर्म में उत्पन्न कर दिया था। बौध्द धर्म को वे इसीलिए पसंद करते थे। क्योंकि वह समानता पर आधारित है। वे कहा करते थे कि वेदशास्त्र पुराणों आदि को सुवर्णी ने छुआछूत का हथियार बना लिया है।

सुविचार

जीवन मिलाना तो भाग्य कि
बात है, मृत्यु होना समय कि वात है,
लेकिन मृत्यु के वाद भी लोगों के
दिलों में जीवित रहना अच्छे कर्मी की वात है।

" मैं किसी भी धर्म का विरोधी नहीं हूँ,
मैं सिर्फ प्रेम और शांति के बीज बो
कर इंसानियत का फूल खिलाना चाहता हूँ
ताकि देश में भाईचारा एवं जाति विहीन
समाज का निर्माण हो सके।"

तुम नीच (दलित) इसलिए हो
क्योंकि तुम दूसरों को
ऊँचा मानते हो।
- डॉ. बाबा साहेब आंबेडकर

स्वयं पर अनुशासन कीजिए, तभी
आप आने वाले कल पर शासन कर सकेंगे।

सादगी ही सबसे बड़ा फैशन है।

कुमारी विद्या चौरे
एम.ए. प्रथम वर्ष
समाज शास्त्र

एक कन्या की पुकार

साधारण रूप से दहेज वह सम्पत्ति है। जिसे पिता अपनी वेटी के पाणिग्रहण संस्कार के समय अपनी पूंजी की इच्छानुसार प्रदान करता है। पुराने समय से ही दहेज प्रथा का प्रचलन चला आ रहा है। इसके अंतर्गत विवाह के समय कन्या पक्ष और वर पक्ष को आभूषण वस्त्र एवं रूपये संघर्ष दान रूप में प्रदान किये जाते थे। परन्तु समय के साथ-साथ यह परस्पर एवं प्रवृत्ति अपराध तथा आवश्यक वन गई आज वर पक्ष दहेज के रूप में टी.व्ही., फ्रीज इस स्थिति में निर्धन पिता की पुत्री था। तो अविवाहित रहकर पिता के साथ जीवन जीने के लिए विवस हो जाते है। दहेज की कु. प्रथा में अनेक युवतियों को काल के गाल में ढकेल दिया है। समाचार पत्र आए दि न इस प्रकार की अवांछनीय घटनाओं से भरे रहते है। रावण ने तो मात्र एक सीता का अपहरण करते उसकी जिंदगी अभिशाप दुःखप्रद नशा आंसुओं की गाथा बनाया था। परंतु दहेज रूपी रावण ने असभ्याओ के सौभाग्य सिंदूर को पोंछकर उनकी जिन्दगी को दुखो की अमर गाथा बना दिया है। इस कु. प्रस्था के लिए झूठी शान रूढ़िवादिता तथा धर्म का आधुनिकरण उत्तरदायी है।

जिस बहू के घर से दहेज में धन नहीं दिया जाता है। ससुराल में आकर उसे जो पीड़ा एवं ताने मिलते है। उसकी कल्पना मात्र से शरीर कभी-कभी उसे ससुराल वालों द्वारा जहर दिया जाता है। अथवा जलाकर मार दिया जाता है। दहेज प्रथा समस्या का निराकार समाज व सरकार की बाते का कार्य नहीं है। इसके लिए युवक व युवतियों को स्वयं आगे बढ़कर दहेज न लेने एवं देने की दृढ़ प्रतिज्ञा करनी चाहिए। मात्र कानून बनाने से इस समस्या का निराकरण नहीं हो सकता इस प्रथा का तभी समापन होना जब पर पक्ष एवं कन्या पक्ष सम्मिलित रूप से इस प्रथा को समाप्त करने में सक्षम होंगे अब तो एक ही नारा होना चाहिए दुल्हन दहेज है। यह नारा मात्र कल्पना की भूमि पर विहार करने वाला न होकर समाज की यथायार्थ धरती पर स्थित होना चाहिए। भारत के कण-कण से सावित्री, सीता एवं गार्गी तुत्य कन्याओ की यह ध्वनि गुंजती होनी चाहिए।

सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा।

कुमारी अरूणा गेडाम
बी.ए. प्रथम वर्ष

आशा का दीपक

वह प्रदीप जो दिख रहा है, झिलमिल दूर नहीं है, थक कर बैठ गये क्या भाई मंजिल दूर नहीं है। चिंगारी बन गयी लहू की बूंद गिरी जो पग से चमक रहे पीछे मुड़ के देखो चरण चिन्ह जगमग से। बाकी होश तभी तक जब तक जलता तूर नहीं है थक कर वैठ गये क्या भाई मंजिल दूर नहीं है।

अपनी हड्डी की मशाल से हृदय चीरते तम का सारी रात चले तुम दुख झेलते कुलिश का। एक खेय है शेष, किसी विध पार उसे कर जाओ वह देखो, उस पार चमकता है मन्दिर प्रियतम का। आकर इतना पास फिरे, वह सच्चा शूर नहीं है। थककर वैठे गये क्या भाई मंजिल दूर नहीं है।

दिशा दीप्त हो उठी प्राप्त कर पुण्य - प्रकाश तुम्हारा लिखा जा चुका अनल - अक्षरों में इतिहास तुम्हारा लिखा जा चुका जिस मिट्टी ने लहू पिया, वह फूल खिलाएगी ही अम्वर पर धन वन छाएगा ही उच्छास तुम्हारा। और अधिक ले जाँच, देवता इतना क्रूर नहीं है। थक कर बैठ गये क्या भाई! मन्जिल दूर नहीं है।

प्रेमलता पटले
बी.ए. द्वितीय वर्ष

नारी की महानता

नारी का जीवन गुलाब के पुष्प की तरह कोमल एवं महान है। जिस प्रकार गुलाब का पुष्प कांटों से घिरा होता है। गुलाब का पुष्प कांटो में रहने पर भी खुशबू को बिखेरता है उसी प्रकार नारी भी कठिनाईयों का सामना हंसते - हंसते करती है एवं दूसरों के लिए खुशियाँ बिखेरती है।

गुलाब का पुष्प सुख जाने पर भी उसकी खुशबू कम नहीं होती। उसकी खुशबू जैसे की तैसी बनी रहती है। उसी प्रकार नारी के जीवन में दुख आने पर भी हारती नहीं। अपने कर्तव्य को पूरा करती है। वह कभी भी अपने को कमजोर नहीं समझती है। वह अपने दुख को दुनिया से छिपाकर आगे ही आगे बढ़ती है। नारी अपने जीवन में सिर्फ दूसरों के लिए जीना जानती है। वह अपने आप के लिए कभी नहीं जीती। इसलिए नारी को महान एवं त्याग की मूर्ति माना जाता है। वह दूसरों के सुख में अपना सुख देखती है। जिस प्रकार फूलों के बगीचे की शोभा गुलाब का फूल बढ़ाता है उसी प्रकार एक घर में परिवार की शोभा नारी बढ़ाती है। गुलाब बिना पुष्प का बगीचा सुना लगता है। उसी प्रकार नारी बिना संसार सूना लगता है। नारी कभी न अपने लिए जी है। और न ही जियेगी। क्योंकि एक महान नारी का जीवन दूसरों को सुख देना होता है। दुख देना नहीं। ये सभी विशेषता नारी के जीवन को महान बनाती है।

घर का बॉस नहीं होती नारी, बल्कि ढोती है घर का सारा बोझ नारी
दो फूलों की शान होती नारी, त्याग की मूर्ति होती है नारी

वो है तो सलामत है आपके कुर्ते के सारे बटन बची उसकी धवलता उनके होने से चलते है। आपके हाथ और आपकी आंखें ढूंढ लेती है अपनी गुम हो गई कलम। घड़ी हो या छड़ी चश्मा हो या अखबार या किताबें, कांटे और जूते सब कुछ होता यथावत बेतरतीख बिखरी नहीं होती है। चीजें खाली नहीं रहती है। कभी सिरहाने तिपाई पर रखा गिलास उनके होने से ही ताला बनी रहती है घर की हवा बयां करती है। जन का हरापन।

अबला न समझो हमको हम भारत की नारी है।
कोमल कोमल फूल नहीं ज्वाला है चिंगारी है।

शायरियाँ

1. दिल जीत ले वो नजर हम भी रखते है।
कल कर दे वो जिगर भी हम रखते है।
वादा किया है किसी से ये दिल भी हम रखते है।
वरना आंखों में आंसू हम भी रखते है।

2. गगन के टूटते तारों का किसने हाल पूछा है।
जहां में दर्द के मारों का किसने हाल पूछा है।
सभी ने फूलों को चाहा, बहारों को किसने नवाजा है।

3. एक दिन सैर को हम निकले दिल में कुछ अरमान थे।
एक तरफ थी झोपड़ियाँ एक तरफ शमशान थे।
पाँव तले एक हड्डी आई उसके यही ब्याने थे।
चलने वाले संभल के चल हम भी कभी इंसान थे।

4. कर जाते है शरात क्योंकि दोस्त शैतान है हम
कर देते है गलती क्योंकि इन्सान है हम।
ना लगाना हमारी बातों को दिल से
आपको तो पता है, है कितने नादान है हम।

5. लहरों से पानी को हटाया नहीं जाता।
गम में रोने वालों को हँसाया नहीं जाता।
बनने वाले तो खुद बन ही जाते अपने।
किसी को अपना कहकर बनाया नहीं जाता।

6. दिखाना है तो सादगी दिखा, पाना है तो रब को पा।
यह दुनिया है बड़ी जालिम गम से कभी न घबरा।

कु. प्रियंका कुशराम
बी.ए. 5 सेमेस्टर

असफलता सफलता का आईना

सफलता और असफलता एक ही सिक्के के दो पहलू है। पर लोग उसी को पसंद करते है। जो सफल है। यही कारण है, कि जब काफी प्रयास करने के बाद भी किसी को असफलता ही मिलती है। तो वह इस कदर घबरा जाता है कि लोगों का सामना करने से कतराने लगता है।

सामान्यतः विकलताएँ कभी खुद आसमान से नहीं टपकती है। प्रयास में कभी - कभी मूल और असावधानी अक्सर असफलताओं को आमंत्रित करती है। असफलता सफलता की ओर जाने का रास्ता है। कुछ लोगों का तो यहाँ तक कहना है, कि सफलता बदलाव के लिए बेहद जरूरी है। यह हमें मानसिक रूप से लड़ने के लिये तैयार करती है।

यदि हम इतिहास के पन्ने पलट कर देखें तो हर महापुरूष की सफलता के पीछे यही रहस्य छिपा मिलेगा कि जीवन की हर परिस्थिति को उन्होंने चुनौती के रूप में स्वीकार किया। वे महापुरूष हम और आपके अपनी आंतरिक शक्तियों को पहचानते थे। और हर कठिन परिस्थिति का पूरे आत्म विश्वास व धैर्यता के साथ सामना करते थे। चुनौति हमारे जीवन को उत्साह जनक गति प्रदान करती है।

मंजिलें तो वही तय करते हैं, जिनके कदमों में जान होती है।
पंखों से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है।

रोशनी अगासे
एम.ए. प्रथम वर्ष

खुद पर यकीन हो तो पहाड़ भी हिला सकते है।

हर इंसान सफलता चाहता है। वह चाहता है कि उसे जिन्दगी का हर सुख मिले। कोई भी कि आप पहाड़ हिला सकते है। आप वाकई ऐसा कर सकते है। ज्यादातर लोगों को यह यकीन ही नहीं होता कि उनमें पहाड़ हिलाने की क्षमता मौजूद है। इसका परिणाम यह होता है, कि वे कभी कोशिश ही नहीं करते।

आपने शायद किसी को यह कहते सुना होगा - "यह सोचना बकवास हे, कि आप किसी पहाड़ को यह कहकर हिला सकते हैं कि पहाड़ मेरे रास्ते से हट जाओ। यह नामुमकिन है। जो लोग ऐसा सोचते है। उन्होंने आस्था और इच्छा की बीच के अन्तर को ठीक से नहीं समझा है। यह भी सच है, कि केवल इच्छा करने से आप लीडर नहीं बन जाते, परन्तु यदि आपको अपनी सफलता का यकीन होतो इस विश्वास के सहारे ही आप सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ सकते है। मुझे विश्वास है, कि मैं यह कर सकती हूँ वाला रवैया हमें शक्ति, योग्यता और ऊर्जा देता है। जिसके सहारे हम कठिन से कठिन काम कर पाते है। हम देखते हैं कि युवा सफलता की चोटी पर पहुंचना असम्भव है, परन्तु इनमे से ज्यादातर लोगों को यह विश्वास ही नहीं होता कि वे चोटी पर पहुँच पायेंगे और इसी कारण वे चोटी पर नहीं पहुँच पाते। जिस व्यक्ति को विश्वास होता है, कि वह यह काम कर लेगा, उसे उस काम को करने का तरीका भी सुझ जाता है।

ना संघर्ष है ना तकलीफें हैं, क्या मजा फिर जीने में।
तूफान भी थम जाएगा, जब लक्ष्य रहेगा सीने में।

रोशनी अगासे
एम.ए. प्रथम वर्ष

फ्लॉप शो

खोल ली बन्दर मामा ने फॉरेस्ट फोटोशॉप आने लगे हजारो ग्राहक बणे - ढणे, टिप-टॉप सबसे पहले कस्टमर थे पोज़ में कौआ-सारस। कलर्ड स्नैप का चार्ज ठुका, प्रिंट रहा पर नीरस। ब्लैक एण्ड व्हाइट के फेरों में टूटा धीरज - धागा जेब्रा तो बावला हो। निगेटिव ले भागा। बिल्ली मौसी की आँखों पर ज्यों ही मारा फ्लैश गुस्से से गुर्राई अगली छीना अग्रिम कैश। दूकान बढ़ाकर बोले मामा दुनिया हरजाई बेमतलब की फोटोग्राफी रास मुझे न आई।

रोशनी अगासे (एम.ए. प्रथम वर्ष)

सुविचार

1. सफलता का महल कर्म की नींव पर खड़ा होता है।
2. मेहनत वो सुनहरी चाबी है, जो बंद भविष्य के दरवाजे भी खोल देती है।
3. एक अच्छे चरित्र का निर्माण हजारों बार ठोकर खाने बाद ही होता है।
4. अगर आप किसी का अपमान कर रहें हैं तो वास्तव में आप अपना सम्मान खो रहें है।
5. चित्र नहीं चरित्र की पूजा करें। व्यक्ति नहीं व्यक्तित्व की पूजा करें।
6. बाहर की चुनौतियों से नहीं, हम अपनी अन्दर की कमजोरियों से हारते है।
7. जहां भय समाप्त होता है, वही जीवन शुरू होता है।
8. अगर कभी जीवन में मौका मिले तो "सारथी" बनने का प्रयास करना "स्वार्थी" नहीं।
9. जो व्यक्ति अपनी गलतियों के लिए स्वयं से लड़ता है, उसे कोई भी नहीं हरा सकता।
10. अपनी अज्ञानता का अहसास होना ज्ञान की दिशा में एक बहुत बड़ा कदम है।

रोशनी अगासे
एम.ए. प्रथम वर्ष

सफलता है मंजिल अपनी

जीवन एक संघर्ष है। यह कथन कोई जाने या ना जाने परंतु आज के समय में एक विद्यार्थी के लिए यह समझना अत्यंत आवश्यक है कि जिंदगी का दूसरा नाम संघर्ष जो किसी भी प्रकार से किया जाए पर उसका लक्ष्य एक ही होता है सफलता।

आज हर कोई सफलता प्राप्त करना चाहता है। यह वह चीज है, जिसके लिये दुनिया भर में हर तरफ दौड़ मची हुई है। किन्तु इसे प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम आवश्यकता है वक्त हे साथ - साथ चलने का। जो व्यक्ति वक्त की कदर करता है। समय रहते हर कार्य कर लेता है। जिंदगी में वही अपना एक मुकाम बना पाता है। और दूसरों से अलग अपनी एक पहचान। सिर्फ किस्मत के भरोसे से हालात को छोड़कर रहने से कुछ अच्छा नहीं होता। इसलिए विद्यार्थी के लिए आवश्यक है कि वह वक्त की कीमत पहचाने और जिंदगी को एक लक्ष्य रूपी दिशा की ओर अग्रसर करें।

"वक्त की गति को समझो, वक्त की रफ्तार थामो।
जिंदगी कोई खेल नहीं है, उसकी सही कीमतें पहचानो।
सफलता का कोई अंत नहीं। इसे बस एक लक्ष्य जानो।
सफलता मंजिल अपनी, सफलता की राहें ठानो।

सामान्यतः देखा गया है, कि दो व्यक्तियों में समान योग्यता होने पर भी एक अधिक सफल होता है, एक कम सफलता प्राप्त करता है। असफल होने के कारण है - फियर ऑफ रिजेक्शन। इसे दूर करेन का तरीका है :-

1. **स्वयं को कम न आंकें :-**
अपने आप को किसी से कम नहीं समझना चाहिये। अपनी कमियों को छिपाने के बजाये उसे महसूस करने की कोशिश करें। और उसी के दम पर अपनी बात कहें।

2. **लक्ष्य निर्धारित करें :-**
आप जो भी करना चाहते हैं उसके लिए सबसे पहले एक लक्ष्य निर्धारित करें।

पूर्णिमा चौधरी
बी.ए. प्रथम वर्ष

जल ही जीवन

पृथ्वी के जीव-जन्तुओं, पशुओं, पक्षियों, फसलों, वनस्पतियों, पेड़-पौधों आदि सभी के लिए जल अनिवार्य है। बिना जल के इन सभी का रह पाना संभव नहीं हैं जल संसार में जीवंतता दिखाई देती है। चारों ओर फैली हुई हरियाली फसलें फल-फूल आदि सभी जल के कारण ही जीवित हैं मानव तो बिना जल के जीवित रह नहीं सकता है। अतः सृष्टि में जल विशेष महत्वपूर्ण है। बिना पानी के संसार सूना है।

जल प्राप्त करने के कई स्त्रोत है। सागर में अथाह जल भरा है। किन्तु वह खारा है, इसलिये वह हर प्रकार की पूर्ति नहीं कर पाता है। पानी का मूल वर्षा है। वर्षा का पानी ही नदियों, तालाबों, जलाशयों में एकत्रित होकर जल की पूर्ति करता है। विगत् वर्षों में जल की निरंतर कमी हो रही है। वर्षा कम हो रही है। धरती का जल स्तर लगातार गिर रहा है। जल की समस्या भारत में नहीं संसार भर में हो रही है। यदि समय रहते जल संरक्षण की ओर ध्यान न दिया गया तो संसार का विनाश हो जाएंगा। जल के बिना किसी का भी जीवित रहना संभव नहीं है। बिना जल के कारण आवश्यक सम्भावी है। जब जगत में पशु, पक्षी, मानव आदि प्राणी ही नहीं होंगे तो संसार सूना हो जाएंगा सत्य यह है, कि जल ही जीवन है। इसलिए जल का महत्व को ध्यान में रखकर भावी योजनाएं बनाई जानी चाहिए। जल व्यर्थ नहीं गवाना चाहिए। जल का दुरूपयोग बिल्कुल भी नहीं करना चाहिए।

कुमारी निकिता पटले
बी.ए. प्रथम वर्ष

व्यक्तित्व (एक अच्छी सोच)

प्रत्येक मनुष्य का अपना - अपना व्यक्तित्व है। वही मनुष्य की पहचान है। संसार में सकारात्मक सोच का प्रसार करने से पहले आप स्वयं को स्वीकार करें। स्वयं को एक बेहतर इंसान बनाने का प्रयत्न करे।

हमारे द्वारा किये गये कार्यों से ही हमारे व्यक्तित्व की पहचान होती है। इसीलिए सवाल यह है कि व्यक्तित्व कैसा हो जो दूसरों पर सकारात्मक प्रभाव डालें। मनुष्य चरित्र को परखना भी कठिन कार्य है किंतु असंभव नहीं है।

व्यक्तित्व के विकास में शिक्षा एवं गुरू का महत्वपूर्ण योगदान है। कोई भी व्यक्ति शिक्षा के द्वारा प्राप्त ज्ञान को उचित गुरू के मार्गदर्शन द्वारा अपने आप में एक बहुत अच्छा व्यक्तित्व प्रस्तुत कर सकता है।

सभी के प्रति बिना किसी भेदभाव के सभी को समान अवसर प्रदान करना एवं विशेष रूप से महिलाओं के प्रति एक आदर्श दृष्टिकोण एवं उन्हें मुख्य रूप से प्रत्येक कार्यों में अपनी रूचि एवं स्वतंत्रता पूर्वक निर्णय ले सके एवं एक अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण करें।

अजय कुमार भलावी
बी.ए. तृतीय वर्ष

Woman

1) Changes her Name
2) Changes her Home
3) Leave her Family
4) Moves in with you
5) Builds a home with you
6) Gets pregnant for you
7) Pregnancy Changes her body
8) She Gets fat
9) Almost Gives up in the labour room Due to the Unbearable pain of child birth
10) Even the kids she Delivers Bear your Name
11) Till the day She Dies...

Everything She Does...

Cooking, cleaning your houses, taking, care of your parents, Bringing up your Children, Earning, Advising you, Ensuring you can be ralaxed, maintaining that benefit you...

Sometimes at the cost of her own Health. Hobbiesand Beauty so who is rally doing whom a favor?

Dear men, Appreciate the women in your lives Always, Because it is Not easy to be a woman.

12) Being a women is priceless

W = Wonderful Mother
O = Outstanding Friend
M = Marvelous Doughter
A = Adorable Sister
N = Nicest Gift to men from God

Shalinee Meshram
Zoology Dept.

मजेदार चुटकुले

एक दिन शिक्षक स्कूल में बच्चों की फोटो दिखाकर कहती है।
ये रहा राजू जो लंदन चले गया।
ये रहा मोहन जो इन्दौर चले गया।
और ये रहा श्यामू जो यही का यहीं रह गया।
ये सुन कर श्यामू बोला।
ये रही हमारी मैडम जिनका देहांत हो गया।

पूजा करवा रहे पंडितजी ने एक देहाती औरत से कहा - बोलिये जयशंकर। उस गृहणी के पति का नाम शंकर था। वह उसका नाम कैसे लेती।
वह बोली - मुन्ना के पापा की जय।

एक लड़का स्कूल से घर आ रहा था। तभी एक मोटी औरत रास्ते में दिखी तो उसने रास्ता छोड़ कर एक दम किनारे से जाने लगा।
औरत - क्यों बेटा, इतने किनारे से क्यों जा रहे हो।
लड़का - मेरी मम्मी कहती है, कि जब सामने से बड़ा वाहन आते दिखे तो किनारे से चलना चाहिए।

मरीज - मुझे भूख नहीं लगती है।
डॉक्टर- बुढ़ापे के कारण।
मरीज - खांसी भी आती है।
डॉक्टर - बुढ़ापे के कारण।
मरीज को गुस्सा आया और दे मारा एक चांटा डॉक्टर को।
डॉक्टर - यह क्या बदतमीजी है?
मरीज - बुढ़ापे के कारण।

दो दोस्त हवाई जहाज से यात्रा कर रहे थे।
रवि - यार भानू मुझे बहुत ठंड लग रही है।
भानू - ठीक है। मै पायलट अंकल से जाकर कहता हूँ कि हवाई जहाज के ऊपर जो पंखा चालू है। उसे बंद कर दे।

दो ग्रामीण महिलायें आपस में बातें कर रही थी।
एक ने पूछा - अरी, यह हसबैण्ड क्या होता है।
दूसरी बोली - यह एक तरह का बैंड होता है, जिसे बेलन से बजाया जाता है।

जज (चोर से) - तुमने इसकी दूकान में चोरी क्यों की?
चोर - जी दुकान पर लिखा था कि दीपावली के शुभ अवसर पर लाभ उठाइए।

मजेदार चुटकुले

एक दिन शिक्षक स्कूल में बच्चों की फोटो दिखाकर कहती है।
ये रहा राजू जो लंदन चले गया।
ये रहा मोहन जो इन्दौर चले गया।
और ये रहा श्यामू जो यही का यहीं रह गया।
ये सुन कर श्यामू बोला।
ये रही हमारी मैडम जिनका देहांत हो गया।

पूजा करवा रहे पंडितजी ने एक देहाती औरत से कहा - बोलिये जयशंकर। उस गृहणी के पति का नाम शंकर था। वह उसका नाम कैसे लेती।
वह बोली - मुन्ना के पापा की जय।

एक लड़का स्कूल से घर आ रहा था। तभी एक मोटी औरत रास्ते में दिखी तो उसने रास्ता छोड़ कर एक दम किनारे से जाने लगा।
औरत - क्यों बेटा, इतने किनारे से क्यों जा रहे हो।
लड़का - मेरी मम्मी कहती है, कि जब सामने से बड़ा वाहन आते दिखे तो किनारे से चलना चाहिए।

मरीज - मुझे भूख नहीं लगती है।
डॉक्टर- बुढ़ापे के कारण।
मरीज - खांसी भी आती है।
डॉक्टर - बुढ़ापे के कारण।
मरीज को गुस्सा आया और दे मारा एक चांटा डॉक्टर को।
डॉक्टर - यह क्या बदतमीजी है?
मरीज - बुढ़ापे के कारण।

दो दोस्त हवाई जहाज से यात्रा कर रहे थे।
रवि - यार भानू मुझे बहुत ठंड लग रही है।
भानू - ठीक है। मै पायलट अंकल से जाकर कहता हूँ कि हवाई जहाज के ऊपर जो पंखा चालू है। उसे बंद कर दे।

दो ग्रामीण महिलायें आपस में बातें कर रही थी।
एक ने पूछा - अरी, यह हसबैण्ड क्या होता है।
दूसरी बोली - यह एक तरह का बैंड होता है, जिसे बेलन से बजाया जाता है।

जज (चोर से) - तुमने इसकी दूकान में चोरी क्यों की?
चोर - जी दुकान पर लिखा था कि दीपावली के शुभ अवसर पर लाभ उठाइए।

☛ एक प्रोफेसर साहब अपने ख्यालों में इतने खोए रहते थे कि उनको घर के बारे में कोई ख्याल ही नहीं रहता था।
एक दिन उनकी पत्नी ने कहा - पता है हमारे मुन्ने ने चलना शुरू कर दिया है।
प्रोफेसर का ध्यान कहीं और था। फिर भी पूछा कबसे?
पत्नी - यही कोई हफ्ता भर हो गया।
प्रोफेसर - ओह, तब तो बहुत दूर निकल गया होगा।

☛ अध्यापक (एक विद्यार्थी से) - हमारे देश की जनसंख्या कितनी है?
विद्यार्थी - लगभग 92 करोड़।
अध्यापक - तुम तो कमाल के लड़के हो।
विद्यार्थी - जी नहीं मैं तो रामलाल का लड़का हूँ।

☛ एक व्यक्ति ने अपने मित्र से कहा - हमारे गांव में इतनी सर्दी होती है, कि हमें दस कंबल ओढ़कर साना पड़ता है।
मित्र ने झट से जवाब दिया - हमारे गांव में इतनी सर्दी होती है, कि दूध के बदले में गाय आईसक्रीम देती है।

☛ महिला (दुकानदार से) भैम! सही रेट लगा लेना, हमेशा आपकी दुकान से ही सामान खरीदते है।
दुकानदार - मैडम, कुछ तो भगवान से डरो मैंने आज ही तो दूकान खोला है। आज पहला ही दिन है।

ज्योति पटले
बी.कॉम 5 सेमेस्टर

लौट जाती हूँ वापस घर की तरफ हर रोज थकी हारी आज तक समझ नहीं आया कि काम करने के लिए जीती हूँ या जीने के लिए काम करती हूँ। बचपन में सबका बार-बार पूछा गया सवाल बड़े होकर क्या बनाना है। जवाब अब मिला फिर बच्चा बनाना थक गयी हूँ तेरी नौकरी से ऐ जिन्दगी

मुनासिब होगा मेरा हिसाब कर दे। दोस्तो से बिछड़कर ये हकीकत खुली बेशक कमीने थे वो पर रौनक उन्ही से थी भरी जेब ने दुनिया की पहचान कराई और खाली जेब ने अपनो की जब लगे पैसे कमाने तो समझ आया शौक तो मां-बाप के पैसों से पूरी होती है।

अपने पैसे से तो बस जरूरत ही पूरी होती है। हंसने का दिल न हो तो भी हसना पड़ता है। कोई जब तो कैसे हो मजे में हूं कहना पड़ता है। ये जिन्दगी का ड्रामा है, दोस्तो यह हर एक को नाटक करना पड़ता है। माचिस की जरूरत यहाँ नहीं पड़ती यहाँ आदमी - आदमी से जलता है। बरान्डे - बरान्डे करने वालों याद रखना कफन का कोई बरान्डा नहीं होता कोई रो कर दिल बहलाता है, कोई हस के दर्द छुपाता है। क्या करामत है कुदरत का जिन्दा इंसान पानी में डूबता है जाता है, मुर्दा तरह के दिखाता है मौत को देखा तो नहीं शायद जो बहुत खुबसूरत होगी जो भी उसे मिलता है जीना दगा देता है। गजब की एकता देखी लोगों की जमाने में जिन्दो में ना जाने कौन सी बात आखरी होगी न जाने कौन सी रात आखरी होगी मिलते-जुलते बाते करते रहो यारों एक - दूसरे से न जाने कौन सी मुलाकात आखरी होगी।

प्रियंका पन्द्रे
एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर
राजनीति

दहेज की माँग

जो युवक विवाह के लिए दहेज की शर्त रखता है।
वह अपनी शिक्षा और देश को बदनाम करता है।

एक किसान के दो बच्चे थे। बेटे का नाम राजू और बेटी का नाम ज्योति था। वही पढ़ी - लिखी लड़की थी। उसके माँ-बाप ने उसकी शादी रचाई । शादी रचाते समय दामाद एवं ससुराल वालों ने 1 लाख रूपये की मांग किया। मां-बाप ने लड़की के ससुराल वालों की 1 लाख रूपये दे दिया। बाद में ज्योति ससुराल में तीन सालों से रह रही थी। परन्तु उस पर ससुराल वाले बहुत अत्याचार करने लगे यहाँ तक की ज्योति का पति ज्योति को मार-मार कर लड़की की हालत गंभीर कर दिया था और ज्योति अपने मायके से कुछ रूपये और मोटर साइकल और ट्रेक्टर लाने को कहा - परन्तु ज्योति के मां-बाप गरीब होने के कारण वह लड़की के ससुरालवालों ने प्रताड़ना किया। यहां तक की लड़की के पिता और भाई ज्योति को मिलने आते थे तो उन्हें मिलने नहीं दिया जाता था। क्योंकि ज्योति को वह गोदाम में बंद करके रखा जाता था। उसे खाना भी नहीं दिया जाता था। जिससे ज्योति की हालत गंभीर होती जा रही थी। उनकी जेठानी भी ज्योति को देखकर चली जाती थी। ज्योति की मदद करने की एक बार कोशिश की । परन्तु ज्योति की हालत इतनी गंभीर हो गई थी। कि वह भाग नहीं सकी। परन्तु दूसरे दिन वह फिर से ज्योति को गोदाम में बंद करके ताला बंदर कर दिया दूसरे दिन ज्योति के जेठ, सास और पति शुशांक उसे अपने बुआ के घर पहुंचा दिया। शुशांक का फूफाजी ओर उनके दो लड़के भी उस ज्योति पर अत्याचार करने लगे और 15 दिन बाद वह दूसरे जमींदार को बेच दिया और उस जमींदार से पैसे लेकर उस ज्योति के पति शुशांक को दे दिया। परंतु ज्योति रोती तड़पती बोलती रही कि मुझे मेरे पिता के पास जाने दो परन्तु ज्योति को उसके मायके नहीं जाने दिया। एक दिन ज्योति बीमार पड़ गई ।

तब जमींदार ने अपने नौकर से अस्पताल ले जाने के लिये कहा और ज्योति को जमींदार के नौकरों ने ज्योति को अस्पताल ले गया। जब ज्योति को अस्पताल में भर्ती किया गया। वहीं पर ज्योति के मायके का एक लड़का रामू नाम का वह ज्योति के माँ-बाप को बताया कि ज्योति अस्पताल में भर्ती है। उसे पास के घुरीपुर गांव के जमींदार के नौकर ने लाया है ऐसा रामू नेकहा तब ज्योतिके माँ-पिता और भाई ने गांव के सरपंच को बताया। तब गांव में पंचायत बैठाया गया और गांव वालों ने निर्णय लिया कि अब हम ज्योति को बचाने की कोशिश करेंगे और वे सफल भी हुए ज्योति ने ससुराल की सारी बातें बताई और उस जमींदार और उसके नौकरों को उसके शुशांक के फुफाजी एवं उसके दोनों लड़कों और ज्योति के ससुरालवालों को भी जेल भेजा गया। ज्योति अपने मां-बाप के साथ रहने लगी।

आज भी हमारे समाज में यह दहेज प्रथा की मांग चालू है। इस प्रकार की प्रथा को समाप्त करना चाहिए।

कुमारी वंदना भैरम
बी.ए. प्रथम वर्ष

शायरियाँ

एक दिन हम सैर पे निकले दिल में यही
अरमान थे एक तरफ भी झोपड़ियाँ एक तरफ
शमशान थे पैर तले एक हड्डी आयी उसके
यही अरमान थे। चलने वाले संभल कर चल
हम भी कभी इन्सान थे।

हर कामयाबी पे तुम्हारा नाम होगा।
तुम्हारे हर कदम पे दुनिया का सलाम होगा।
डट कर करना सामना तुम मुश्किलों का
एक दिन वक्त भी तुम्हारा गुलाम होगा।

कौन कहता है प्यार करना पाप है।
प्यार के लिए बने हम आप है।
प्यार जीवन का जाप है।
सिर्फ प्यार के लिए उन्हें मत ठुकराओ जो
हमारे मां-बाप है।

यकीन होके ना हो यकीन बात तो यकीन की है।
हमारे जिस्म की मिट्टी इसी जमीन की है।
इस वतन के सभी लोग भाई-भाई है, "वर"
ये दूरियों की शिकायत किसी कमीन की है।

हर सपनों को अपनी सांसों में रखो
हर उम्मीद को अपनी बाहों में रखो।
हर कदम पर जीत तुम्हारी होगी।
"बस" मंजिल को अपनी निगाहों में रखो।

ऐसा नहीं होगा कि रासतों में रहमत नहीं होगी।
पैरों को तेरे चलने की आदत नहीं होगी।
अगर है, कश्ती तो ना होगा किनारा कभी दूर
तेरे इरादों में अगर जीतने की चाहत बची होगी।

कु. नीतू कटरे
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

शायरी

खुदा बुरी नजर से बचाए आपको
चांद सितारों से सजाए आपको
गम क्या होता है, ये आप भूल ही जाओ
खुदा जिन्दगी में इतना हसाएं आपको।

सूरज की किरणे रोशनी लाती है।
उठते ही पढ़ाई की याद आती है।
हम तो उठ गये बढ़ने के लिये
अब देखते हैं हमारी मेहनत कितनी रंग लाती है।

हर जलते दीपक तले अंधेरा होता है।
हर रात के पीछे एक सवेरा होता है।
लोग डर जाते है। मुसीबत को देखकर
मगर हर मुसीबत के पीछे सच का सवेरा होता है।।

फर्क होता है अमीर और फकीर में
फर्क होता है किस्मत और लकीर में
अगर कुछ चाहो और न मिले तो समझ लेना
की कुछ और अच्छा लिखा है तकदीर।।

जीत के खातिर जुनून चाहिए।
जिसमें उबाल हो ऐसा खून चाहिए।
यह आसमान भी आएगा जमीन पर
बस इरादों में जीत की गूंज चाहिए।।

लोग तो पीछे तब आते हैं जब हम
कामयाब होने लगते है।।

आयुषी मानकर
बी.ए. द्वितीय वर्ष

लड़की भी बन सकती है, उत्तराधिकारी (कन्या भ्रुण हत्या बंद करो)

एक बहुत बड़े राजा के यहाँ एक लड़की ने जन्म लिया तो उस राजा ने रानी से बिल्ली के बच्चे ने जन्म लिया कहकर उस लड़की को पेटी में करके नदी में बहा दिया क्योंकि उसे अपना उत्तराधिकारी लड़के की आवश्यकता थी।

एक महान ऋषि उस नदी में हमेशा स्नान करते थे। उन्हें वह पेटी मिली जिसमें वह लड़की थी। उस ऋषि ने उस लड़की को अच्छे अच्छे संस्कार दिया। अब वह लड़की बड़ी हो गई और एक दिन जब वह राजा अपने मंत्री के साथ उसी जंगल से गुजर रहे थे जहां उस ऋषि का आश्रम था। वहां पर उस राजा तथा मंत्री को एक शेर ने झपट लिया और उन पर हमला कर दिया। उस लड़की ने उन्हें संकट में देखकर झट ही अपने घोड़े पर सवार होकर उनकी रक्षा की।

उन्हें थोड़ी खरोंच आयी थी। तो उसने ऋषि के आश्रम में ले जाकर बैठा दिया। उन्होंने उस बहादुर लड़की की खूब तारीफ की। ऋषि ने कहा, "बेटी, तुम खीर तो बहुत अच्छी बनाती हो, महाराज हमारे यहां पधारे हैं। तुम खीर बनाकर ले आओ।" उस लड़की ने मोतियों की खीर लाई। तो क्रहा क्या मोती की भी खीर बन सकती है। तत्पश्चात लड़की ने कहा क्यों नहीं महाराज, जब एक औरत बिल्ली के बच्चे को जन्म दे सकती है। तो क्या मोती की खीर नहीं बन सकती। राजा सारी बात समझ गया। ऋषि ने कहा - हाँ महाराज, यह आपकी ही पुत्री है। इतनी बहादुर जिसे आपने नदी में बहा दिया था। राजा खूब पछताया और अपनी पुत्री से क्षमा मांगकर उसे उसने अपने घर ले गया और उस अपना उत्तराधिकारी बना लिया।

कुमारी शीतल पारधी
बी.ए. प्रथम वर्ष

सत्य वचन

1) जिन्हें गुस्सा आता है, वो लोग सच्चे होते है। मैंने झूठों को अक्सर मुस्कुराते हुए देखा है।
2) गीता में लिखा है, अगर आपको कोई अच्छा लगता है, तो अच्छा तो नहीं, बल्कि अच्छे आप हो क्योंकि, उसमें अच्छाई देखने वाली नजर आपके पास है।
3) जो स्वयं को हर परिस्थिति के अनुसार ढालना जानता है। उसे जीवन जीने की कला आ जाती है।
4) सपने वो सच नहीं होते जो सोते वक्त देखें जाते हैं, सपने वो सच होते है। जिनके लिये आप सोना छोड़ देते है।
5) जो आपसे दिल से बात करता हो, उसे कभी दिमाग से जवाब मत देना।
6) देर से बनो पर जरूर कुछ बनो क्योंकि लोग वक्त के साथ खैरियत नहीं हैसियत पूछते है।
7) जो चीज आपको चैलेंज करती है, वही आपको चेंज करती है।
8) जो कल था उसे भूलकर तो देखो, जो आज है उसे जीकर तो देखो। आने वाला पल खुद संवर जायेगा, एक कोशिश करके तो देखो।
9) जिंदगी का तजुर्बा तो नहीं मगर इतना मालूम है, छोटा आदमी बड़े मौके पर काम आ जाता है। और बड़ा आदमी छोटी सी बात पर औकात दिखा जाता है।

लोग डूबते हैं तो समुद्र को दोष देते हैं, मंजिल ना मिले तो किस्मत को दोष देते है।
खुद तो संभल कर चलते नही, जब लगती है ठोकर तो पत्थर को दोष देते हो।

कु. मनीषा मर्सकोले
बी.ए. पंचम सेमेस्टर

सुविचार

लोहे को कोई नष्ट नहीं कर सकता।
बस उसका जंग उसको नष्ट करता है।
इसी तरह आदमी को कोई और
नहीं बल्कि उसकी सोच ही नष्ट करती है।
सोच अच्छी रखो निश्चित अच्छा ही होगा।

सेवा सभी की करिये मगर आशा
किसी से भी ना रखिये क्योंकि सेवा
का सही मूल्य भगवान ही दे सकते है।
इंसान नहीं।

इंसान कितना भी सुंदर क्यों ना हो परन्तु
उसकी परछाई हमेशा काली होती है।

जरूरी नहीं रोशनी चरागों से ही हो,
शिक्षा से भी घर रोशन होते है।

मेहनत एक सी सुनहरी चाबी है, जो
बन्द भाग्य के दरवाजे भी खोल देती है।

समस्याओं की अपनी कोई
साईज नहीं होती।
वो तो सिर्फ हमारी हल करने की
क्षमता के आधार पर छोटी
और बड़ी होती है।

यदि जीवन में लोकप्रिय होना हो तो,
सबसे ज्यादा आप शब्द का उसके
बाद हम शब्द का और सबसे कम
मैं शब्द का उपयोग करना चाहिए।

निन्दा और निन्दा
पर जो व्यक्ति - विय पा लेते है।
उन्हें आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता।

अरूचि बिसेन

निश्चित ही सफलता मिल जायेगी।

सफलता एक ऐसा शब्द है जो सिर्फ शब्द नहीं किसी की चाहत और किसी का सपना होता है पर इसकी यह आसान नहीं होती सफलता प्राप्त करने के लिए इन यह की पार करना पड़ता है।

आईये पढ़ते हैं, सफलता पर लिखी कविता

राह नहीं आसान है ये
मुश्किल रास्ते में आएगी
किस्मत पे भरोसा मत करना
ये राह तुम्हें भटकाएगी
मत हारना हिम्मत इनसे तुम
चाहे जितने घमासान रहे
निश्चित ही सफलता मिल जाएगी
तुम खड़े जो सीना तान रहे

जो कमी कोई रह जाती है।
तो उसका तुम अभ्यास करो
जो गिरते हो तुम एक दफा
तो उठकर फिर प्रयास करो
लगे रहो तुम कर्म में अपने
जब तक इस तन में प्राण रहे
निश्चित ही सफलता मिल जाएगी
तुम खड़े जो सीना तान रहे।

गिरने में वक्त नहीं लगता
लगता है नाम कमाने में
खुद ही चलना पड़ता है
न बता है साथ कोई जमाने में
सच्चाई की राह जो चलते
समाज में उसकी शान रहे
निश्चित ही सफलता मिल जाएगी
तुम खड़े जो सीना तान रहे।

कुछ भी करना तुम जीवन में
मगर कभी न वो काम करना
हो जाए जिससे बदनामी
और जीना भी लगे मरना
इस तरह से रहना तुम कि
बना तुम्हारा सम्मान रहे
निश्चित ही सफलता मिल जाएगी
तुम खड़े जो सीना तान रहे।

हर्ष रायकर
बी.ए. द्वितीय वर्ष

सुविचार

जीत की खातिर बस जुनून चाहिए।
उसमें उबाल हो ऐसा खून चाहिए।
ये आसमां भी आएगा जमीं पर
बस इरादों में जीत की गूँज चाहिए।

जिंदगी एक अभिलाषा है।
अजब इसकी परिभाषा है।
जिंदगी क्या है। मत पूछो यारों
सँवर गई तो जन्नत
और बिखर गई तो तमाशा है।

चलते रहे कदम दोस्तों
किनारा जरूर मिलेगा।
सवेरा जरूर खिलेगा।
जब ठान लिया मंजिल पर
जाना, रास्ता जरूर मिलेगा।
ऐ राही न थक, चल
एक दिन समय जरूर फिरेगा।

मेहनत सीढ़ियों की तरह होती है।
और भाग्य लिफ्त की तरह
किसी समय लिफ्ट तो बंद हो
सकती है। पर सीढ़ियां हमेशा
ऊँचाई की तरफ ले जाती है।

आपके पास अपने सपनों को
हकीकत देने का समय केवल
आज का ही है। कौन जाने कल
आपके पास समय हो या न हो।

दुनिया का सबसे खूबसूरत पौधा
विश्वास का होता है।
जो जमीन पर नहीं
दिलों में उगता है।

खुशी उनको नहीं मिलती
जो अपनी शर्तों पे
जिदगी जिया करते है।
खुशी उनकी मिलती है।
जो दूसरे की खुशी के
लिए अपनी शर्ते बदल
लिया करते है।

लोहे को कोई नष्ट नहीं कर सकता
बस उसका जंग उसे
नष्ट करता है, इसी तरह
आदमी को भी कोई और नहीं
बल्कि उसी सोच ही नष्ट कर सकती है।

इंसान का दिल
बड़ा होना चाहिए।
बातें तो सब
बड़ी - बड़ी करते है।

ज्योति मेश्राम
एम.ए. प्रथम वर्ष

सीख

कष्ट पड़े, कठिनाई आए
पीछे पॉव न धरना
काँटों में गुलाब खिलते है
कांटो से क्या डरना
सम्मुख पर्वत हो, सागर हो
साहस कभी न खोना
जितना तपता है उतना ही
और चमकता सोना।

हार कभी जो नहीं मानता
जीत उसी की होती है।
जो गहरे सागर में जाता है।
वह पाता मोती है।
खिला गुलाब सिखाता हमको
कपट - कण्टको में मुस्काना
सबकी आंखों को सुख देना।
चारों ओर सुगंध लुटाना।

संगीता परते
एम.एस.सी. प्रथम वर्ष
वनस्पति विज्ञान

भारत की जयकार से

तेस्वी हुंकार से।
नवशक्ति संचार से।
दसो दिशाएं गूंज उठेगी
भारत की जयकार से।।

नष्ट करेंगे सारे भेद
कष्टों का पूरा विच्छेद
समरस सुश्वमम शुभ युग लाये
दसो दिशाएं गूँज उठेगी
भारत की जयकार से।।

नये - नये संकट आते
युवा कदम बढ़ते जाते
कुरूक्षेत्र को कम्पित कर दें
गाण्डीव की ढंकार से
दसो दिशाएं गूंज उठेगी
भारत की जयकार से।।

अपने श्रम, कौशल्य सहारे
सपने हो साकार हमारे
सभी क्षेत्र को विकसित कर दे
वैभव के भण्डार से
दसो दिशाएं गूंज उठेगी
भारत की जयकार से।।

अंशुल विश्वकर्मा
बी.ए. पंचम सेमेस्टर

जिंदगी

कभी हंसती है मुझ पर
तो कभी हंसाती है जिन्दगी।
बिन कहे भी बहुत कुछ कह जाती है जिंदगी।
छोड़कर हर एक किताब को,
तुम हाथ उसका थाम लो।
क्योंकि हर रोज कुछ नया सिखाती है जिंदगी।
कभी हंसती है मुझ पर
कभी खुशी का मरहम लगाती है जिंदगी
कभी बेवजह यूं ही गम दे जाती है जिंदगी।
जो ना भर उन घाव को,
बस यूं ही खुला छोड़ दो
क्योंकि वक्त आते हर गम भर जाती है जिंदगी।
कभी हंसती है मुझ पर तो,
कभी हंसाती है जिंदगी।
कभी कश्ती की तरह डूबकर भी तैर जाती है जिंदगी।
कभी शीशे की तरह
टूटकर बिखर जाती है जिंदगी।
प्यार इससे भी बेपनाह करो,
सांसे इसमें भी है, वरना
सब की तरह एक दिन छोड़कर।
यूं ही गुजर जाती है जिंदगी।
कभी हंसती है मुझ पर
तो कभी हंसाती है जिंदगी।

नफीसा खान
बी.एस.सी. 1 वर्ष

सफलता

आसान कहाँ होती है राह सफलता की
तपना पड़ता है संघर्षों की आग में
तब कहीं जाकर कुंदन सा व्यक्तित्व निखरता है।
आंखों के नीर में उठाना पड़ता हैं, रत्नाकार का ज्वार
तब तैयार होता है रास्ता जो निकलता है
सिंधु का सीना चीर कर।
असफलता की ठोंकरे चैन कहां लेने देती है।
न कुछ कर पाये अब तक हम यह पीर सोने नहीं देती
रातों के रतजगे बनकर देश सा उभरते है।
अथक प्रयासों का सिलसिला हर वक्त संदेश ये देता रहा है।
तुम बने हो जग जीतने के लिये उभरो बन कर विश्वविजेता जग में परचम लहराओ अपना।
जो आसानी से मिल जाये मोल कहाँ उसका रहता है।
जितनी अंधेरी हो रात सूरज उतना ही तेजी से चमकता है।
आसान कहाँ होती है राह सफलता की।

आशीष ठाकुर
कॉमर्स डिपार्टमेंट

ज़िन्दगी की सच्चाई

किसी को लगता है
हिन्दू खतरे में है।
किसी को लगता है,
मुसलमान खतरे में है।
ये धर्म का चश्मा
उतारकर देखो यारों
पता चलेंगा कि
हमारा हिन्दूस्तान खतरे में है।

समय

जिंदगी में अगर बुरा वक्त
नहीं आता तो
अपनों में छुपे हुए गैर
और गैरों में छुपे हुए अपने
कभी नजर नहीं आते।

दोस्ती का समां

न जाने सालों बाद
कैसा समा होगा
हम सब दोस्तों में से
कौन कहां होगा।

ज़िन्दगी जीना

जिन्दगी अपने हिसाब से जीना चाहिए।
औरों के कहने पर तो
सर्कस में शेर भी नाचता है।

सपना

जितना बड़ा सपना होगा।
उतनी बड़ी तकलीफें होगी।
और जितनी बड़ी तकलीफें होगी।
उतनी बड़ी कामयाबी होगी।

पैसा

पैसा इंसान को ऊपर ले जा
सकता है।
लेकिन इंसान पैसे को ऊपर
नहीं ले जा सकता।

हुनर का घमंड

जिंदगी में कभी अपने हुनर
पे घमंड मत करना
क्योंकि पत्थर जब पानी में गिरता है
तो अपने ही वजन से डूब जाता है।

टीचर

सही क्या है? गलत क्या है?
ये सबक पढ़ाते आप
झूठ क्या है? सच क्या है?
ये बात समझाते है आप,
जब सूझता नहीं कुछ भी
राहों को सरल बनाते है आप।

गुलनाज खान
बी.ए. तृतीय वर्ष

फनी जोक्स

☞ जिन्दगी में जो आपके साथ अच्छा करें उन्हें धन्यवाद दो। जो बहुत बुरा करें उन्हें मुस्कुरा कर ये सोच के माफ कर दो कि सभी मेन्टल रोगी अस्पतालों में नहीं मिलते कुछ स्कूलों में भी घूमते है।

☞ पत्नि - ये पलंग क्यों लाये हो?
पति - धनतेरस हैं न इसलिए।
पत्नि - धनतेरस पे पलंग?
पति - हां, धनतेरस पे सोने का कुछ न कुछ खरीदते है।

☞ इंजीनियरिंग के छात्र - सर हमने एक ऐसी चीज बनाई है। जिसमें आप दीवार के आर-पार भी देख सकते है।
सर - वाह! क्या चीज है।
छात्र - छेद।
सर - दे थप्पड़ - दे थप्पड़

☞ बंता - यह चाकू क्यों उछाल रहे हो।
संता - सोसाइट करने के लिए।
बंता - तो फिर उडालने की क्या जरूरत है।
संता - कहीं इन्फेक्शन ना हो जाये।

☞ ओरल इग्जाम देने के लिए 2 विद्यार्थी तैयार बैठे थे। पहले का नंबर आया और वो अंदर जाता है।
एक्सटर्नल - मान लो, आप ट्रेन से यात्रा कर रहे हो और अचानक आपको गर्मी लग रही है, तब आप क्या करोंगे।
विद्यार्थी - मैं खिड़की खोलूंगा।
एक्सटर्नल - बहुत खूब। फिर आप समझो कि उस खिड़की का क्षेत्रफल 1.5 5Qm है। और डिब्बे का घनफल 12 M3 और ट्रेन 80 कि.मी. की रफ्तार से पश्चिम दिशा की ओर जा रही है। और वायु की गति वेग -3 m/s दक्षिण की ओर है तो वो डिब्बा कितने समय में ठंडा होगा?
उस विद्यार्थी को कोई उत्तर देते नहीं बना और वो पास नहीं हो पाया और बाहर आया, बाहर आकर अपने मित्र को वो प्रश्न बताया।

दूसरा विद्यार्थी अंदर जाता है। और उसका प्रश्न शुरू होता है।
एक्सटर्नल - मान लो आप ट्रेन से यात्रा कर रहे हो और अचानक गर्मी लग रही हैं तब क्या करोगे?
दूसरा विद्यार्थी - मैं कोट उतारकर अलग रख दूंगा।
एक्सटर्नल - फिर भी गर्मी लग रही हो तो फिर
विद्यार्थी - मैं शर्ट निकाल दूंगा।
एक्सटर्नल - चिढ़कर, अरे फिर भी गरम हो रहा हो तब क्या करोंगे?
विद्यार्थी - मैं बनियान निकाल दूंगा सर।
एक्सटर्नल - फिर भी गर्मी लग रही हो तब (गुस्से में)
विद्यार्थी - गर्मी से मर भी गया तो चलेगा पर मैं खिड़की नहीं खोलूंगा।

दीक्षा गौतम
एम.एस.सी. प्रथम सेमेस्टर

सत्य वचन

1) बिना पुण्य किये पुण्य का फल सबको चाहिए लेकिन पाप करके भी पाप का फल किसी को नहीं चाहिए।

2) इस तरह न कमाओ कि पाप हो जाए

3) इस तरह खर्च न करो कि कर्ज हो जाए

4) इस तरह न खाओ कि मर्ज हो जाए

5) इस तरह न बोलो कि क्लेश हो जाए

6) इस तरह न चलो कि देर हो जाए

7) इस तरह न सोचो कि चिंता हो जाए

8) छोटा बनकर रहोगे तो मिलेगी हर बड़ी मंजिल बड़ा होने पर माँ भी गोद से उतार देती है, झूठ बोलकर रिश्ते उलझाने से अच्छा है सच बोलकर समझा लिए जाए क्यूंकि सच्चाई देर सबेर आ ही जायेगी, मदद करना सीखिए फायदे के बगैर, मिलना जुलना सीखिए मतलब के बगैर जिन्दगी जीना सीखिये दिखावे के बगैर।

9) आगे बढ़ने वाला व्यक्ति कभी किसी को बाधा नहीं पहुंचाता और दूसरों को बाधा पहुंचाने वाला व्यक्ति कभी आगे नहीं बढ़ता। कभी किसी अच्छे इंसान से गलती हो जाए तो भी सहन कर लो, क्योंकि मोती अगर कचरे में भी गिर जाये तो कीमती रहता है।

10) गुस्सा अकेला आता है, मगर हमसे सारी अच्छाई ले जाता है।

11) सब्र भी अकेला आता है, मगर हमें सारी अच्छाई दे जाता है।

12) एक छोटी सी चीटी आपके पैर को कांट सकती है पर आप उसके पैर को नहीं कांट सकते इसलिए जीवन में किसी को छोटा न समझे, वह जो कर सकता है। शायद आप न कर पाएं अगर कोई व्यक्ति आपसे जलता है, तो ये उसकी बुरी आदत नहीं है। बल्कि आपकी काबिलियत है, जो उसे ये काम करने में मजबूर करती है।

13) समाज में बदलाव क्यों नहीं आता। क्योंकि गरीब में हिम्मत नहीं । मध्यम में फुर्सत नहीं और अमीर को जरूरत नहीं।

14) किसी की अर्थी यात्रा में जाओ तो ये मत समझना कि आप उसे उसकी मंजिल पर ले जा रहे हो। बल्कि यह समझना की अर्थी पर लेटा इंसान, मुर्दा होकर भी तुम्हे तुम्हारी मंजिल दिखाने ले जा रहा है।

15) जो लोग आपसे जलते हैं उन लोगों से नफरत कभी मत करना, क्योंकि यही वो लोग है, जो ये समझते हैं कि आप उनसे बेहतर है।

सीमा नागेश्वर
बी.ए. षष्ठ सेम.

चुटकुले

☞ लड़का - तुम लड़कियां इतनी सुन्दर क्यों होती हो?
लड़की - क्योंकि भगवान ने हमें खुद अपने हाथों से बनाया है।
लड़का - कह तो ऐसे रही हो, जैसे हमें तो ठेके के मजदूरों से बनवाया गया हो।

☞ एक लड़की ट्रेन से उतरी और पास खड़े लड़के से पूछा - ये कौन सा स्टेशन है?
लड़का (जोर - जोर से हंसते हुए पेट पकड़कर) बोला ये तो रेल्वे स्टेशन है पगली...

☞ दो औरत आपस में बातें करती है।
पहली औरत - आज मेरे पति का जन्मदिन है।
समझ में नहीं आता कि उन्हें क्या उपहार दूं।
दूसरी औरत - "तलाक दे दो।"

☞ स्कूल में एक शिक्षा अधिकारी मुआयना करने आए तो देखा कि एक अध्यापक कुर्सी पर बैठे - बैठे सो रहे थे।
अधिकारी ने उन्हें जगाया और पूछा - आप क्लास में सो रहे है?
अध्यापक - जी नहीं महोदय! मैं तो इन बच्चों को समझा रहा था कि प्राचीनकाल में कुम्भकर्ण कैसे सोता था।

☞ दिनेश अपने कुत्ते को पकड़कर उसकी पूँछ को पाईप में डाल रहा था।
प्रवीण - ओए ये क्या कर रहा है? कुत्ते की पूंछ कभी सीधी नहीं होती।
दिनेश - मालूम है मुझे मेरे को तो पाईप टेढ़ा करना है।

☞ लड़की - मेरा बर्थडे गिफ्ट कहां है?
लड़का - वो सामने सड़क पर लाल रंग की कार दिख रही है?
लड़की - (खुशी से चिल्लाती हुई) हां - हां दिख रही है।
लड़का - तो बस उसी रंग की नेल पॉलिश लाया हूँ।

☞ चना बेचने वाला - ले लो चना। एक बार खाओगे तो बार-बार खाओंगे।
एक लड़का - मुफ्त में खिलाओंगे तो हजार बार खायेंगे।

☞ संता - एक बार मेरे उपर से स्कूटर निकल गया पर फिर भी मुझे कुछ नहीं हुआ।
बंता - यह तो कुछ भी नहीं एक बार मेरे उपर से हवाई जहाज निकल गया, मैं फिर भी बच गया।

दिव्या टेम्भरे
बी.कॉम 1 प्रथम वर्ष

सुविचार

छोटे कदम से सफर की शुरूआत करें।
हकीकत है इस बात में कि। छलांग लगाने वाले फिसल जाते है।
धीमी शुरूआत वाले जीत जाते है।

खोकर पाने का मजा ही कुछ और है।
रोकर मुस्कुराने का मजा ही कुछ और है।
हार तो जिन्दगी का हिस्सा है मेरे दोस्त
हारने के बाद जीतने का मजा ही कुछ और है।

आप अपना भविष्य नहीं बदल सकते ।
लेकिन अपनी आदतें बदल सकते है।
और निश्चित रूप से आपकी आदतें
आपका फ्युचर बदल देंगी।

ताश के पत्तों से महल नहीं बनता
नदी को रोकने से समुद्र नहीं बनता
आगे बढ़ते रहो जिन्दगी में हर पल
क्योंकि एक जीत से कोई सिकन्दर नहीं बनता।

सफलता कि कहानियां मत पढ़ो
उससे आपको केवल एक संदेश मिलेगा।
असफलताओं की कहानियां पढ़ो उससे
आपको सफल होने के आइडिया मिलेंगे।

कभी - कभी बहुत छोटे - छोटे निर्णय ही हमारे जीवन को हमेशा के लिए बदल देते है।

अच्छे विचार

कोई भी कारण हो।
कैसी भी बात हो।
गुस्सा मत करो।

चिढ़ो मत
जोर से मत बोलो

मन शान्त रखो।
विचार करो।
फिर से निर्णय लो।

आवाज से आवाज नहीं मिटती।
बल्कि चुप्पी से मिटती है।

तकलीफ सिर्फ आपको होंगी।
दुख भी आपको ही होगा।

मन शान्त रखोंगे तो
सुख भी आपको ही मिलेगा।

दीक्षा वासनिक
बी.ए. द्वितीय वर्ष

POETRY

THE LOVE SONG OF J.ALFRED PRUFROCK

T.S. ELIOT

Born : 26 September 1888 (England)
Died : 4 January 1965 (London)
T.S. Eliot : Poems dramatic monologue poems.

"Let us go then. you and I when the evening is spread out against the sky. Like a patient etherized up on a table.
Let us go through certain half deserted streets. The muttering retreats."

"Talking of Michelangelo and indeed there will be time to wonder. "Do I dare and Do I dare Time to tarn back and descend the star.
with a bold spat in the middle of my hair."

"And Seeing that it was a soft October hight.
Curled once about the house and fell asleep."

"Let us roll all our strength and all.
Our sweetness up into one ball and tear our pleasure with a rough strife.
Through the iron gates of life."

"That is not it at all.
That is not what I meant at all."

"And pray to God to have mercy upon us And I play that I may forget These matters that with myself I too much discuss."

"The Lord of life is risen again. and love is Lord of all."

Ku. Swati Bramhe
B.A. V Sem.

मुझको तेरा सहारा सदा चाहिए....

आसरा इस जहां का मिले न मिले
मुझको तेरा सहारा सदा चाहिए।

चांद, तारे पलक पर दिखे न दिखे
मुझको तेरा नजारा सदा चाहिए।

यहाँ खुशियां है कम और ज्यादा है गम
जिधर देखो वहीं है। भरम ही भरम।

मेरी महफिल में सम्मा जले न जले।
मेरे दिल में उजाला तेरा चाहिए।

कभी वैराग है। कभी अनुराग है।
जहां बसते है मालिक वहीं बाग है।

मेरी चाहत की दुनिया बसे न बसे
मेरे दिल में बसेरा तेरा चाहिए।

मेरी टेढ़ी है चाल ओर पथ है विशाल
हर कदम पर मुसीबत है। अब तो संभाल।

है समाज की आरजू यही तुमसे बाबा परमपिता
पैर सबके थके ये चले ना चले।
बस तेरा सहारा सदा चाहिए।

आरती गाडेकर
एम.ए. तृतीय सेमेस्टर

नारी सशक्तिकरण

अंदर से रोती है फिर भी बाहर से हंसती है।
बार - बार जुड़े से फिर भी बिखरे बालों को कसती है।
शादी होती है उसकी या वो बिक जाती है।
शौक, सहेली, आजादी मायके में छूट जाती है।
फटी हुई एड़ियों को साड़ी से ढकती है।
खुद से ज्यादा वो दूसरों का ख्याल रखती है।
सब उस पर अधिकार जमाते वो सबसे डरती है।
क्योंकि बिकी हुई औरत बगावत नहीं करती है।
शादी होकर लड़की जब ससुराल में आती है।
भूलकर वो मायका घर अपना बसाती है।
घर आंगन खुशियों से भरते जब वो घर में आती है।
सबको खाना खिलाकर फिर खुद खाती है।
जो घर संभाले तो सबकी जिन्दगी संभल जाती है।
लड़की शादी के बाद कितनी बदल जाती है।
गले में गुलामी का मंगलसूत्र लटक जाता है।
सिर से उसका पल्लू गिरे तो सबको खटक जाता है।
अक्सर वो ससुराल की बदहाली में सड़ती है।
क्योंकि बिकी हुई औरत बगावत नहीं करती है।
आखिर क्यों बिक जाती, औरत इस समाज में
गुलामी में जागती है, गुलामी में सोती है।
दहेज की वजह से हत्याएं जिनकी होती है।
जीना उसका चार दीवारों में उसी में वो मरती है।
क्योंकि बिकी हुई औरत, बगावत नहीं करती है।
जिस दिन सीख जाएगी वो हक की आवाज उठाना
उस दिन मिल जायेगा उसे सपनों का ठिकाना
खुद बदलो समाज बदलेगा वो दिन भी आएगा।
जब पूरा ससुराल तुम्हारे साथ बैठकर खाना खायेगा।
लेकिन आजादी का मतलब भी तुम भूल मत जाना।
आजादी समानता है ना कि शासन चलाना।
असमानता के चुंगल में नारी जो कस जाती है।
तानाशाही का शासन वो घर में चलाती है।
समानता से खाओ, समानता से पियो
समानता से रहो समानता से जियो।
असमानता वाले घरों की एक ही पहचान होती है।
या तो पुरूष प्रधान होता है या महिला प्रधान होती है।
रूढ़िवादी घर की नारी आज भी गुलाम है।
दिन भर मशीन की तरह पड़ता उन पे काम है।
दु:खो के पहाड़ से वो झरने की तरह झरती है।
क्योंकि बिकी हुई औरत बगावत नहीं करती है।

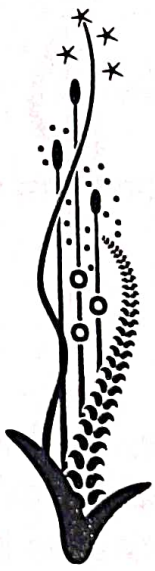

आरती मासुरकर
बी.एस.सी. 6 सेम.

छात्र जीवन के लिए सुविचार

1) छात्र जीवन जिंदगी का सबसे सुनहरा दौर होता है, क्योंकि इस दौर में न किसी बात की चिंता होती है न मन में कटुता होती है इसलिए हर किसी को अपने छात्र जीवन का तुलक उठाना चाहिए।

2) आज के दौर में हर छात्र के लिये यह जरूरी हो जाता है, कि वह मोबाईल और कंप्यूटर पर बेकार में समय बर्बाद न करें क्योंकि ऐसा करना उनके कैरियर को भी तबाह कर सकता है।

3) छात्र जीवन में यह बहुत जरूरी होता है कि आप बुरी चीजों से बचें क्योंकि इस उम्र में आपको सही या गलत में पूरी तरह फर्क करना नही आता है।

4) पढ़ाई करना उबाऊ हो सकता है, लेकिन पढ़ाई करने से ही हमारी जिंदगी बेहतर बनती है।

5) किसी और की नकल मत कीजिए। मौलिक बनिए... केवल मौलिक बनकर ही आप बड़ी सफलता पा सकते है।

6) दोस्ती कम लोगों से कीजिए और दोस्ती केवल अच्छे लोगों से कीजिए क्योंकि बुरे लोगों से दोस्ती करने वाले लोग इसकी मँहगी कीमत चुकाते है।

7) छात्र जीवन की छोटी-छोटी आदतें हमारे जीवन में बड़ा फर्क पैदा करती है।

विशाल पटले
प्रयोगशाला तकनीशियन

माता – पिता को भूलना नहीं

भूलो सभी को मगर, माता – पिता को भूलना नहीं।
उपकार अगणित है उनके, इस बात को भूलना नहीं।
पत्थर पूजे कई तुम्हारे, जन्म के खातिर भरे।
पत्थर बन माता – पिता का, दिल कभी कुचलना नहीं।।
मुख का निवाला दे भरे, जिनमें तुम्हें बड़ा किया
अमृत पिलाया तुमको, जहर उनके लिये उगलना नहीं।
कितने लड़ाये लाड़, सब अरमान भी पूरे किये।
पूरे करो अरमान उनके, बात यह भूलना नहीं।
लारथे कमाते हो भले, माता – पिता से ज्यादा नहीं।
सेवा बिना सब राख है, मद में कभी फूलना नहीं।
संतान से सेवा चाहो, संतान बन सेवा करो।
जैसी करनी वैसी भरनी, न्याय यह भूलना नहीं।
सोकर स्वयं गीले में, सुलाया तुम्हें सुखी जगह
माँ की अमीमय आंखों को, भूलकर कभी भिगोया नहीं
जिसने बिछाये फूल थे, हर दम तुम्हारी राह में।
उस राहबर की राह के, कंटक कभी बनना नहीं।

कु. लीना मेश्राम
(अतिथि विद्वान ज.भ.स.)
बी.एस.सी. कम्प्यूटर साइंस

English a Vernacular Language

Vernacular is the language of a particular group, profession, region or country especially as spoken rather than formally written. English has emeged as a vernacular language for the last few decades. It is the language which is popular among the particular groups of students, society and classes. A section of society (all over the world) is more comfortable with english rather than their own mother tongue or regional language. English is very popular among youngsters especially school and college going students. For corporate world there is no other option than english, as it has a broad spectrum which extents acrors the globe. It is the language which is more prominently accepted as a popular means of communication, almost in all the countries Its spoken form is diyyerent in dyyerent countries professions region and groups. According to rerian - wlostor, "Vernacular" was brought into the English language as early as 160 from the latin vernaculars.

English is such a language which facilitates the communication between the people all over the world. It can rightly be considered as an international language. Each and every country and society has its own language and it is very tediores and almost impossible to communicate with one another in the alsence of any common language this vood of common language is fullifilled by English, which is spoken in almost all parts of globe.

Hence english can be correctly titled as a Vernacular language as it is one of the most spoken language of the world It is used in everyday lye by the common people of a specific population It is not the national or literary language of all the countries but it is used to facilitate communication acros the globe.

Shubhra Tiwari
English Dept.

स्त्रियों के लिये बना दहेज अभिशाप

आज भारतीय समाज में दहेज स्त्रियों के लिये एक विकराल समस्या का रूप धारण किये हुए है। जिससे प्रायः यह देखने में आता है। कि दहेज के कारण आज स्त्रियों की जिंदगी सोचनीय एवं दयनीय है।

आज दिनों - दिन उनके साथ दुर्वव्यवहार किया जा रहा है। जिससे हमारा आज शिक्षित और सभ्य समाज होने के अतिरिक्त भी असभ्य समाज की श्रेणी में रखा भी जाये तो इस बात की अतिश्योक्ति नहीं होगी।

"अबला जीवन हाय तुम्हारी
यही कहानी, आँचल में है।
दूध और आंखों में पानी।"

आज के इस आधुनिक युग में घरेलु हिंसा का सबसे वीभत्स रूप दहेज हिंसा का है। दहेज शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार की हिंसा को प्रोत्साहित करता है। इसमें विवाह से संबंधित दोनों पक्ष तमाम रिश्तेदार संबंधित होते है। दहेज हिंसा की अंतिम शिकार तो पीड़ित स्त्री ही होती है। जिसका कोई कसूर न होते हुए भी समाज और उसका परिवार उसे दहेज के लिये प्रताड़ित करते है। हमारा समाज दहेज मुक्त हो अतः नारी के सपनों को साकार होने दो।

"मुक्त करो दहेज प्रथा, से चिर
वंदनी नारी को। युग-युग की निर्गम
कारा से जननी, सखी, व्यारी को"।

याशमी वट्टी
बी.ए. प्रथम वर्ष

युवा उत्सव 2019

मध्यप्रदेश उच्चशिक्षा विभाग द्वारा निर्देशित युवा उत्सव सत्र 2018-2019 में शा. राजा भोज महा. कटंगी द्वारा साहित्यिक / सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में छात्रा-छात्राओं ने भाग लेकर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं में निम्न छात्र / छात्राओं द्वारा महाविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया।

विधा	छात्र / छात्राओं का नाम	प्राप्त स्थान
1) एकल गायन	1) अश्विनी बारमाटे	तृतीय स्थान
2) समुह नृत्य	1. विनीत मेश्राम 2. हर्ष रायकर 3. सौरभ तहेकार 4. पंकज चौरे 5. ऋषभ हिरकने	तृतीय स्थान
3. स्किट	1. कु. आरती मासुरकर 2. आरती निषाद 3. फरहीन खान 4. गुलनाज खान	प्रथम स्थान प्राप्त कर अन्तर जिला प्रतियोगिता में प्रतिनिधित्व किया।
4. रंगोली	1. कु. आरती निषाद	द्वितीय स्थान
5. कोलाज	1. कु. मीना गौतम	द्वितीय स्थान
6. स्पॉट पेंटिंग	1. विरेन्द्र नेवारे	प्रथम स्थान प्राप्त कर अन्तर जिला प्रतियोगिता में प्रतिनिधित्व किया।
7. क्ले माँउलिग	1. पुष्पेन्द्र बिसेन	प्रथम स्थान प्राप्त कर अन्तर जिला प्रतियोगिता में प्रतिनिधित्व किया एवं अतर विश्वविद्यालय स्तर जबलपुर (उड़ीसा) में प्रविष्ट किया
8. प्रश्न मंचे	प्रेमलता नागेश्वर	तृतीय स्थान

सांस्कृतिक विधाओ में श्री आशीष सूर्यवंशी (ढोलक) श्री खुमानसिंह (नगाड़ा) धनराज राऊत (बबला) एवं श्री मिलिन्द हिरकने के मार्गदर्शन में उक्त कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गई।

प्रभारी युवा उत्सव
श्रीमती डॉ. कुसुमलता उइके

सांस्कृतिक प्रभारी
दिपेन्द्र हिरकने

राजाभोज शासकीय महाविद्यालय से सत्र 2018-19 में संभाग एवं राज्य स्तर पर प्रतिनिधित्व करने वाले छात्र-छात्रा (खिलाड़ियों की सूची)

क्रमांक	प्रतियोगिता का नाम	छात्र/खिलाड़ी का नाम
1.	संभाग स्तरीय कुश्ती (पुरूष)	विनोद बाहे B.A. Ist
2.	संभाग स्तरीय कबड्डी (पुरूष)	भूपेन्द्र भलावी M.A. II योगेश ठवकर B.A. II
3.	संभाग स्तरीय क्रिकेट (पुरूष)	शुभम मेघानी B.com II राहुल लांजेवार B.A. III कुलदीप विश्वकर्मा B. Com III हर्ष अग्रवाल B.Com II
4.	संभाग स्तरीय कबड्डी (महिला)	रितु मर्सकोले B.A. II
5.	संभाग स्तरीय फुटबॉल (पुरूष)	नवीद यादव B.Com III डिकेश B.Com III
6.	संभाग स्तरीय व्हालीबाल (पुरूष)	जितेन्द्र गजाभ B.A. II
7.	संभाग स्तरीय खो - खो (महिला)	संगीता परते M.A. I निशा कोवाचे B.Sc. Ist दिव्या शरणागत B.A. Ist दुर्गा मेश्राम B.Sc. II कृष्णी B.Com II
8.	राज्य स्तरीय ऐथलेटिक्स	विक्रांत बोपचे B.A. II श्री आशीष चतुर्वेदी (क्रीडा अधिकारी)

पूर्व छात्र सम्मेलन (प्रतिवेदन)

स्टेट प्रोजेक्ट डायरेक्टोरेट (आई.डी.पी.) राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा (रूसा) उच्च शिक्षा विभाग (म.प्र.) के आदेश के अनुसार कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सत्र 2017-18 में स्नातक कर चुके छात्र / छात्राओं की जानकारी प्राप्त करना तथा वर्तमान स्थिति में रोजगार से संबंधित अध्ययनरत् है। इसकी जानकारी प्राप्त की गई। साथ छात्र-छात्राओं को रोजगार के अवसरों की जानकारी दी गई। जिसके तहत निम्न जानकारी उपलब्ध करायी गई।

1) स्किल ट्रेनिंग के अवसर
2) स्वरोजगार हेतु मार्गदर्शन
3) प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी एवं जानकारी
4) विद्यार्थियों की अपेक्षा पर विचार विमर्श।

पूर्व छात्र सम्मेलन (Alluminl meet)

कार्यक्रम में लगभग 80 छात्र / छात्राओं ने उपस्थिति दर्ज की। महाविद्यालय में कार्यरत् समस्त सहायक प्राध्यापक के द्वारा छात्र / छात्राओं को उपरोक्त विषयों की जानकारी प्रदान की गई।

कार्यक्रम के अंत में भाग लेने वाले भूतपूर्व छात्र / छात्राओं को भेद प्रदान किये गये।

:: प्रभारी ::
श्री प्रमोद मेश्राम

:: समिति ::
सरिता कुशवाहा

मतदाता जागरूकता (प्रतिवेदन)

राजाभोज शासकीय महाविद्यालय कटंगी में मतदाता जागरूकता अभियान के अंतर्गत दिनांक 1 / 11 / 2018 से 3 / 11 / 2018 तक चित्रकला, स्लोगना, रंगोली, मेहंदी, मेहंदी आदि प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई जिसमें महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया तथा उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। इन प्रतियोगिताओं के माध्यम से मतदान का महत्व एवं अनिवार्यता के प्रति बच्चों में जागरूकता लाई गई।

राष्ट्रीय मतदाता दिवस समारोह 2019 के अंतर्गत महाविद्यालय स्तर पर निबंध, वाद-विवाद, स्लोगन एवं चित्रकला प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। जिसके तहत् भारत के लोकतंत्र के प्रति छात्र-छात्राओं में आस्था एवं युवाओं की भूमिका का महत्व बतलाया गया साथ ही निर्वाचन में बैलेट पेपर की अपेक्षा ई.व्ही.एम. अधिक विश्वसनीय है या नहीं, इस विषय पर वाद-विवाद कराया गया। "फ्रेस्टिवल ऑफ डेमोक्रेसी विषय पर जिला स्तरीय निबंध प्रतियोगिता का आयोजन कराया गया। लोकतंत्र में मतदाता की भूमिका पर परिचर्चा कार्यक्रम व मानव श्रृंखला बनाकर शत प्रतिशत मतदान हेतु शपथ ली गई एवं संकल्प पत्र भरवाए गए। छात्र-छात्राओं की रेली द्वारा मतदाता जागरूकता का प्रयास किया गया।

इन गतिविधियों को संचालित को संचालित करने में कार्यक्रम प्रभारी डॉ. कुसुमलता उइके, संयोजक डॉ. निखत खान, सहसंयोजक दीपेन्द्र हिरकने, श्रीमती शुभ्रा तिवारी, किशोर टेम्भुर्ने, श्रीमती अनामिका मिश्रा, अनंत कुमार साकेत, कुलदीप देशमुख, बी.डी. साकेत, संदीप कुमार, अनार सिंह लोधी, श्रीमती अनिता देशमुख खेमराज कन्नौजे, डॉ. के.सी. पारधी सभी का प्रत्यक्ष - अप्रत्यक्ष रूप से महत्वपूर्ण योगदान रहा।

:: संयोजक ::
डॉ. कुसुमलता उइके

:: सह-संयोजक ::
डॉ. निखत खान

रेड - रिबन (प्रतिवेदन)

भारत सरकार ने वर्ष 1991 में रेड़ रिबन क्लब की स्थापना की है। रेड़ रिबन क्लब HIV/AIDS जागरूकता हेतु एक अंतर्राष्ट्रीय प्रतीक / चिन्ह है। इस क्लब के माध्यम से शैक्षिक संस्थानों में अध्ययरनरत छात्र/छात्राओं को एड्स से बचाव हेतु जागरूकता किया जाता है। राजाभोज, शासकीय महाविद्यालय कटंगी में भी रेड़ रिबन क्लब संचालित है। क्लब के माध्यम से महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं को एड्स के विषय में जागरूक किया जाता है। इसके लिये विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये जाते है। प्रत्येक वर्ष 1 दिसम्बर से 7 दिसम्बर तक इस क्लब के माध्यम से महाविद्यालय में एड्स जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया जाता है। शैक्षणिक सत्र 2018-19 में भी एड्स जागरूकता सप्ताह 01-07 दिसम्बर को मनाया गया। जिसमें प्रश्न-मंच, निबंध, प्रतियोगिता, स्लोगन व पोस्टर आदि विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम छात्र/छात्राओं को जागरूक किया गया जिसके माध्यम से समाज तक जागरूकता का संदेश पहुंचा । इस का समापन एवं पुरूस्कार वितरण का कार्यक्रम 7 दिसंबर 2018 को किया गया जिसमें मुख्य अतिथि डॉ. प्रगति सोनी एवं डॉ. चंद्रदीप साहू, परामर्शदाता उप स्वास्थ्य केन्द्र कटंगी उपस्थित रहे तथा एड्स के रोकथाम संबंध में जानकारी प्रदान की तथा विभिन्न प्रतियोगिता में विजेता प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र एवं सील्ड देकर पुरूस्कृत किया गया। निबंध प्रतियोगिता में कु. प्रज्ञा पटले प्रथम, कुमारी ममता चौधरी द्वितीय तथा शुभम चौधरी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

स्लोगन प्रतियोगिता में कु. आरती मासुरकर प्रथम अरविन्द सहारे द्वितीय तथा शेषकला ठाकरे ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। पोस्टर प्रतियोगिता में कु. प्रज्ञा पटले / योगिता राहंगडाले प्रथम, आरती बिसेन द्वितीय तथा कु. नेहा / शिक्षा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। प्रश्न मंच में कु. ममता चौधरी प्रथम, कु. शेषकला ठाकरे तथा अनिल कुमार जामरे ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। एड्स जागरूकता कार्यक्रम के समापन की अध्यक्षता प्रभारी प्राचार्य श्री अनिल कुमार शेन्डे ने किया। तथा कार्यक्रम में उपस्थित डॉ. कुसुमलता उइके एवं श्री प्रमोद कुमार मेश्राम ने "एड्स" विषय पर अपने विचार व्यक्त किया। कार्यक्रम के समापन पर श्री राजू विश्वकर्मा ने आभार व्यक्त किया तथा डॉ. रीना मिश्रा ने कार्यक्रम का संचालन किया। एड्स जागरूकता कार्यक्रम में डॉ. रविन्द्र अहरवाल, डॉ. आशुतोष नारायण द्विवेदी, डॉ. विष्णुदेव प्रजापति, डॉ. सालेहा अख्तर खान, श्रीमति शालीनी मेश्राम, श्री धीरेन्द्र चौधरी, श्री अनार सिंह लोधी, श्री खेमराज कनोजे, श्रीमति ममता घरडे, कु. सरिता कुशवाह, श्री संदीप सुमन, श्री भगवानदीन साकेत, अनंत कुमार साकेत, श्री किशोर टिम्भुरने आदि व्याख्याना उपस्थित रहे तथा कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग प्रदान किया।

:: संयोजक ::

राजू विश्वकर्मा (वनस्पति विज्ञान)

रसायन शास्त्र प्रतिवेदन

राजाभोज शास. महाविद्यालय कटंगी बालाघाट की स्थापना वर्ष 1989 को हुई है। सत्र 2012 से महाविद्यालय में B.Sc. (Bio+Math) प्रारंभ की गई है। रसायन शास्त्र विभाग में प्रत्येक वर्श 250-300 छात्र-छात्राएँ प्रवेश लेते है। तथा 75 प्रतिशत छात्र-छात्राएँ उत्तीर्ण होते है। उत्तीर्ण छात्र/छात्राएँ वर्तमान समय में कुछ छात्र/छात्राएँ उच्चशिक्षा प्राप्त कर रहें है। कुछ छात्र/छात्राएँ सरकारी, अर्ध्द-सरकारी, प्राइवेट नौकरी कर रहें है एवं कुछ छात्र-छात्राएँ अपना स्वरोजगार / स्टार्ट-अप स्थापित कर चुके है। और कुछ छात्र/छात्राएँ P.Sc., Up.sc., Net, SET, S.Sc, Banking and Teaching etc की तैयारी में कर रहें है।

वर्तमान सत्र 2018 - 19 में उच्च शिक्षा मध्यप्रदेश शासन, भोपाल के द्वारा महाविद्यालय में M.Sc. Chemistry 26 छात्र/छात्राओं ने प्रवेश लेकर अध्ययनरत है। B.Sc. Ist year 339, B.Sc. IInd year 244, B.Sc. VI 163 छात्र/छात्राएँ अध्ययनरत है।

रसायनशास्त्र प्रयोगशाला Instrument एवं Chemicals उपलब्ध के अनुसार नियमित प्रयोग कराये जाते है। Chemistry National or International अध्ययन हेतु Book उपलब्ध की जाती है। 55 National or International publication authors की लगभग 250 Book प्रस्तावित है।

महाविद्यालय के M.Sc. or B.Sc. के छात्र/छात्राओं को रिसर्च (अनुसंधान) की जानकारी दी जाती है।

वनस्पतिशास्त्र विभाग प्रतिवेदन
(प्रतिवेदन)

राजाभोज शासकीय महाविद्यालय कटंगी बालाघाट की स्थापना वर्ष 1989 से हुई है। सत्र 2012 में महाविद्यालय में बी.एस.सी. (बायोलाजी) प्रारंभ की गई है। वनस्पतिशास्त्र विभाग में प्रत्येक वर्ष 200-250 छात्र/छात्राएँ प्रवेश लेते है तथा 75 प्रतिशत छात्र/छात्राएँ उत्तीर्ण होते है। उत्तीर्ण छात्र/छात्राएँ वर्तमान समय में कुछ छात्र/छात्राएँ उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे है। कुछ छात्र/छात्राएँ उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे है। कुछ छात्र/छात्राएँ सरकारी/अर्ध्द सरकारी/प्राइवेट नौकरी कर रहें है। तथा अन्य छात्र/छात्राएँ अपना स्वरोजगार / स्टार्ट-अप स्थापित कर चुके है।

वर्तमान सत्र 2018-19 में उच्च शिक्षा मध्यप्रदेश शासन भोपाल के द्वारा महाविद्यालय में M.Sc. (Botany) संचालित की गई है। जिसमें 28 छात्र/छात्राओं ने प्रवेश लेकर अध्ययनरत है। B.Sc. प्रथम वर्ष में लगभग 285 B.Sc. द्वितीय वर्ष में लगभग 204 तथा B.Sc. तृतीय वर्ष में 127 छात्र/छात्राएँ अध्ययनरत है।

वर्तमान व्याख्याता सदस्य :-

क्रमांक	व्याख्याता का नाम	योग्यता	पद
1.	डॉ. आशुतोष नारायण द्विवेदी	M.Sc., M.Phill, Ph.D	अतिथि विद्वान
2.	डॉ. रविन्द्र प्रसाद अहरवाल	M.Sc., M.Phill, Ph.D	अतिथि विद्वान
3.	डॉ. रीना मिश्रा	M.Sc., Ph.D.	अतिथि विद्वान
4.	श्री राजू विश्वकर्मा	M.Sc., M.Phill	अतिथि विद्वान

प्रयोगशाला उपकरण :-

महाविद्यालय के वनस्पतिशास्त्र विभाग निम्नलिखित प्रयोगशाला उपकरण उपलब्ध है।

1. UV - Visible Spectrophotometer
2. BoD Incubator
3. Horizontal Laminar Air How
4. Hot Air oven
5. Centrifuge
6. Besic cater
7. Digital weight machine
8. Get Electrophoresis
9. Compound Microscope
10. TLC Chamber
11. Digital PH meter

पुस्तकालय :- वनस्पतिशास्त्र विभाग में लगभग 60 राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय लेखकों / प्रकाशन की लगभग 150 पुस्तकें उपलब्ध है तथा 65 राष्ट्रीय / अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशन / लेखकों की लगभग 310 पुस्तकें प्रस्तावित है।

महाविद्यालय परिवार

क्रमांक	नाम		पद
1.	प्रो. अनिल कुमार शेण्डे	-	प्राचार्य
2.	प्रो. डॉ. कुसमलता उइके	-	प्रो. अर्थशास्त्र
3.	प्रो. प्रमोद कुमार मेश्राम	-	प्रो. भौतिकी
4.	श्री डी.एस. इड़पाचे	-	लेखापाल (सहा. ग्रेड 2)
5.	श्रीमती निगहत अफशां खान	-	अति. वि. हिन्दी
6.	श्रीमती शुभ्रा तिवारी	-	अति. वि. अंग्रेजी
7.	डॉ. निख़ित खान	-	अति. वि. राजनीति
8.	श्री खेमराज कनौजिया	-	अति. वि. केमेस्ट्री
9.	डॉ. कस्तूरचंद पारधी	-	अति. वि. कॉमर्स
10.	श्री आशीष ठाकुर	-	अति. वि. कॉमर्स
11.	श्री राजू विश्वकर्मा	-	अति. वि. बॉटनी
12.	श्री अनार सिंह लोधी	-	अति. वि. गणित
13.	श्रीमती ममता घरडे	-	अति. वि. जीव विज्ञान
14.	श्री ईश्वरचंद रहांगडाले	-	अति. वि. लाइब्रेरियन
15.	श्री आशीष चतुर्वेदी	-	अति. वि. स्पोर्टस ऑफीसर
16.	श्री विष्णु देव प्रजापति	-	अति. वि. जीव विज्ञान
17.	डॉ. सालेहा अख्तर	-	अति. वि. जीव विज्ञान
18.	श्री अनंत कुमार साकेत	-	अति. वि. गणित
19.	श्रीमती अनामिका मिश्रा	-	अति. वि. गणित
20.	डॉ. रविन्द्र प्रसाद अहिरवार	-	अति. वि. बॉटनी
21.	श्री भगवान दीन साकेत	-	अति. वि. गणित
22.	श्रीमती शालिनी मेश्राम	-	अति. वि. जीव विज्ञान
23.	कु. सरिता कुशवाहा	-	अति. वि. केमेस्ट्री
24.	श्री धीरेन्द्र कुमार चौधरी	-	अति. वि. जीव विज्ञान
25.	श्री संदीप सुमन	-	अति. वि. केमेस्ट्री
26.	डॉ. आशुतोष द्विवेदी	-	अति. वि. बॉटनी
27.	डॉ. रीना मिश्रा	-	————

28.	श्री किशोर कुमार टेम्भुर्णे	-	अति. वि. समाज शास्त्र
29.	श्रीमती मोनिका सोनी	-	अति. वि. केमेस्ट्री
30.	श्रीमती रागिनी गुप्ता	-	ज.भा. अर्थशास्त्र
31.	श्रीमती अनीता देशमुख	-	ज.भा. समाजशास्त्र
32.	श्री मिलिंद हिरकने	-	ज.भा. राजनीति
33.	श्री दीपेन्द्र हिरकने	-	ज.भा. उद्यमिता
34.	श्री कुलदीप देशमुख	-	ज.भा. पर्यावरण
35.	श्री सी.के. तिवारी	-	ज.भा. कम्प्यूटर
36.	श्री सोहनलाल बिरनवार	-	लैब टेकनीशियन
37.	श्री विशाल पटले	-	ज.भा. लैब परिचायक
38.	श्री श्यामलाल मरकाम	-	लैब परिचायक
39.	श्री योगेन्द्र गजभिये	-	ज.भा. लैब टेकनीशियन
40.	श्री थानसिंह पारधी	-	ज.भा. लाइब्रेरियन
41.	श्री मनोज कुमार चौहान	-	ज.भा. कम्प्यूटर ऑपरेटर
42.	श्री सतीश गढ़पाल	-	ज.भा. लैब परिचायक
43.	श्री दवनलाल ठाकरे	-	भृत्य
44.	श्री महेन्द्र पटले	-	भृत्य
45.	श्री घनश्याम सोनी	-	फर्रास
46.	श्री देवेन्द्र कुमार मेश्राम	-	चौकीदार
47.	श्री लक्ष्मण सोनटक्के	-	स्वीपर

महाविद्यालय के चमकते सितारे

ा ज्योतिषी

ा :- 10 गोल्ड मेडल

ोक्स (अर्थशास्त्र विषय) में 10 गोल्ड मेडल प्राप्त कर
ावती विश्वविद्यालय के पुराने समस्त रिकार्डो का तोड़ा।

ुष्पेन्द्र कुमार बिसेन "मूर्ति कलाकार"

उपलब्धियाँ :-

1. जिला स्तर – 1st Rank
   मूर्ति कला प्रतियोगिता (बालाघाट)
2. संभाग स्तर प्रतियोगिता
   रानी दुर्गावती विश्व विद्यालय, जबलपुर
3. नेशनल जोनल चैंपियनशीप – विजेता
   संभलपुर (उड़ीसा)

समस्त स्टाफ

संपादक मण्डल